चतुर्थ अध्याय

“ विवेच्य उपन्यासों का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन”

चतुर्थ अध्याय

''विवेच्य उपन्यासों का विचार पक्ष : तुलनात्मक अध्ययन''

प्रस्तावना :

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील का 'महानायक' उपन्यास में वैचारिकता की प्रधानता दिखाई देती है। दोनों का उद्देश्य विशिष्ट विचार को अभिव्यक्त करना है। दोनों की वैचारिकता विकास की कामना के लिए है। यथास्थितिवादी व्यवस्था में दोनों ने परिवर्तन के विचार प्रस्तुत किए हैं। इसलिए दोनों का वैचारिक पक्ष का विवेचन-विश्लेषण अनिवार्य है। विवेच्य उपन्यासों में अभिव्यक्त विचारों में विविधता नजर आती है जिसका अध्ययन यहाँ प्रस्तुत हैं।

4.1 राष्ट्र विषयक विचार :

अपने देश के प्रति आस्था, राष्ट्रीयता की भावना, राष्ट्र के बारे में सोचना, विचार करना तथा उसकी उन्नति की कामना करना जिन विचारों से अभिव्यक्त होता है वे विचार ही राष्ट्र विषयक विचार हैं। दूसरे शब्दों में अगर कहना हो तो जो विचार राष्ट्रीयता की भावना की ओर ले जाते हैं वे विचार राष्ट्र विषयक विचार हैं।

4.1.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित राष्ट्र विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मुख्यत: राष्ट्र विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है। मोहनदास एक साल के गिरमिट पर दादा अब्दुल की केस की पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका जाते हैं। दादा अब्दुला मोहनदास को डरबन में कोर्ट रुम देखने के लिए ले जाते हैं लेकिन मेजिस्ट्रेट उन्हें पगड़ी उतारने के लिए कहते हैं। मोहनदास पगड़ी न उतारकर कोर्ट रूम के बाहर चले जाना पसंद करते हैं। इस घटना को वे वहाँ के अखबार में छपवाते हैं - ''भारत में फेटा हो या पगड़ी सबके लिए समान महत्त्व रखती है। हिंदू, मुसलमान, पारसी सब भारतीय पहले है।''[1] उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि मोहनदास जातीय भेदभाव के विरूद्ध है। वे हिंदू, मुसलमान, पारसी सभी को एक मानते हैं, उनके विचार राष्ट्र विषयक हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 79

कोई भी कार्य करते समय हमें एकता से करना चाहिए। एकता के कारण ही हम कठिन से कठिन काम कर सकते है। एकता प्रस्थापित करने के लिए मोहनदास गिरमिटियों को एकत्रित कर उन्हें मताधिकार के विरोध में आवाज उठाने के लिए कहते हैं। जब सब गिरमिटियों को मताधिकार के विषय में जानकारी देने के लिए एकत्रित किया जाता है तब मोहनदास गिरमिटियों को संबोधित करते हुए कहते हैं - ''हमें जाति और धर्म भुलाकर एक बात याद रखनी है - अपना 'कंट्री' अपना 'मदर-लैण्ड' उसकी 'इज्जत'।''[1] उक्त मोहनदास के कथन से स्पष्ट होता है कि हमें हिंदु ओर मुस्लिमवाली लोगों में भेदभाव निर्माण करनेवाली पहचान भुलाकर राष्ट्रीयता तथा 'भारतीय' की पहचान को स्वीकार करना है। हमें जाति-भेद को भुलाकर अपने देश की इज्जत की रक्षा करनी है। मोहनदास के उक्त विचारों से उनकी राष्ट्रीयता का परिचय मिलता हैं।

दक्षिण अफ्रीका के गिरमिटियों पर लगाए गए मताधिकार के विरोध में आवाज उठाने के लिए तथा गिरमिटियों की दयनीय स्थिति से नेताओं को अवगत कराने के लिए मोहनदास भारत वापिस आते हैं। पूना में वे बाल गंगाधर तिलक से मिलकर उनके भारत आने के उद्देश्य की जानकारी बताते हुए मोहनदास कहते हैं - ''भारत आने का मेरा उद्देश्य है कि दक्षिण अफ्रीका में जीने के लिए संघर्ष कर रहे भारतीयों की तकलीफ अपने और उनके भी, देशवासियों के सामने रख सकूँ। उनके लिए सब पार्टियों का समर्थन पा सकूँ। नहीं तो वहाँ रह रहे भारतीयों के लिए अपना अस्तित्व बनाए रखना मुश्किल हो जाएगा। वे कुचल दिए जाएँगे।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि मोहनदास के विचार अपने देशवासियों के कल्याण के प्रति उनकी तड़प को स्पष्ट करते हैं। गिरमिटियों पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए अपने देशवासियों को तथा भारतीय नेताओं को प्रेरित करना चाहते हैं। अत: स्पष्ट है कि उनके विचारों में राष्ट्रीयता की भावना ओतप्रोत हैं।

मोहनदास अपने राष्ट्र की उन्नति के लिए मातृभाषा को महत्त्वपूर्ण समझते हैं। किसी भी देश की उन्नति अगर होनी है तो उस देश में एक भाषा को होना जरुरी है। अत: मोहनदास अपने देश के विकास के लिए मातृभाषा को ही महत्त्वपूर्ण मानते हैं। मोहनदास अपने मित्र हेनरी पोलक से अपने बच्चों की पढ़ाई के बारे में चर्चा करते हैं। हेनरी पोलक उन्हें

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 219
2. वही, पृष्ठ - 410

अंग्रेजी स्कूल में (अॅडमिशन) प्रवेश लेने की सलाह देते हैं। तब मोहनदास हेनरी पोलक को संबोधित करते हुए कहते हैं - "मैं यह बात मानता हूँ, जो माँ-बाप अपने बच्चों को अंग्रेजी में सोंचना और बात करना सिखाते हैं, वे बच्चों के भी शत्रू है और अपने देश के भी।"[1] अत: उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि आत्मोन्नति के लिए, राष्ट्रोन्नति के लिए, मातृभाषा से महत्त्वपूर्ण दूसरी कोई भाषा नहीं।

मि. हेनरी पोलक अँग्रेजी भाषा को ही सर्वश्रेष्ठ मानते हैं। आज के युग में अंग्रेजी से बढ़कर दूसरी कोई भाषा नहीं है ऐसा पोलक का कहना है। फिर भी मोहनदास हेनरी पोलक की बात मानने को तैयार नहीं थे। मोहनदास हेनरी पोलक को संबोधित कर कहते हैं - "मैं तुम्हारी इस बात से सहमत नहीं हूँ। दुनिया में ऐसा कोई समाज है जो अपनी भाषा त्यागकर दूसरी भाषा के माध्यम से उन्नति का सपना देखे ?"[2] इससे स्पष्ट है कि राष्ट्र की उन्नति मातृभाषा पर ही निर्भर है। अत: देश के विकास के लिए मातृभाषा ही महत्त्वपूर्ण है इसमें दो राय नहीं। मातृभाषा में ही व्यक्ति अपने विचारों को खुलकर एवं सक्षमता के साथ प्रस्तुत कर सकता है।

4.1.2 'महानायक' में चित्रित राष्ट्र विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में राष्ट्रविषयक विचारों की अधिकता दिखाई देती है। इसमें सुभाषबाबू के देश के लिए आय.सी.एस्. से त्यागपत्र और उनके मृत्यु तक के विचारों में राष्ट्रीयता की प्रधानता दिखाई देती है। सुभाषबाबू इंग्लैड में आय.सी.एस्.की परीक्षा चौथे नंबर से उत्तीर्ण हो जाते हैं। फिर भी ब्रिटिशों की गुलामी से युक्त नौकरी को स्वीकार करने की बजाय नौकरी से त्यागपत्र देना चाहते हैं। जब सुभाषबाबू त्यागपत्र देने की बात अपने मित्र दिलिप को बताते है तब सुभाषबाबू के भाई सतीशदा नींद से जाग जाते हैं। तब अपने भाई की ओर देखते हुए उग्र स्वर में सुभाषबाबू कहते हैं - "मातृभूमीच्या पायातल्या बेड्या तोडणं हे माझं जीवनध्येय आहे. सनदी नौकरीच्या बेड्या पायात बांधून मला स्वत:हून त्या खेड्यात फसायचं नाही."[3] (मातृभूमि के पाँवों की बेडियाँ तोड़ना मेरे जीवन का प्रथम लक्ष्य है। सरकारी नौकरी की बेडी में बँधकर मैं स्वयं को इस फंदे में फँसानेवाला नही हूँ।) स्पष्ट है कि सुभाषबाबू अपना प्रथम लक्ष्य भारत देश को गुलामी से मुक्त करना ही समझते थे।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 614
2. वही, पृष्ठ - 614
3. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 51

अत: मातृभूमि की सेवा ही सबसे श्रेष्ठ सेवा है। अत: उनके विचारों में निहित पर्याप्त देशप्रेम यहाँ दिखाई देता है।

नियोजन के कारण कोई भी कार्य सफल हो जाता है। सुभाषबाबू का अपने देश तथा उसके विकास को लेकर नियोजन दिखाई देता है। सुभाषबाबू जब अपने उपचार के लिए वियेना जाते हैं तब वहाँ सुभाषबाबू से मिलने आए विठ्ठलभाई के साथ सुभाषबाबू देश स्वतंत्रता तथा उसके पुनर्निमाण आदि के बारे में चर्चा करते हैं। 'स्वतंत्र भारत' के विषय में विठ्ठलभाई के पूछनेपर प्रत्युत्तर में सुभाषबाबू उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - ''आम्हाला हवं एक प्रबळ संघराज्य. जिथं किसान आणि कामगारांचा कैवार घेणारं जागरूक शासन असेल. रशियासारखं पंचवार्षिक नियोजन हवं जड उद्योगांचा औद्योगिकरणाचा देशात पाया घातला जावा. ग्रामोद्योगांनाही गती मिळावी. लोकसंख्यावाढीच्या भस्मासुराला वेळीच बाटलीत बंद करायला हवं. नको जातीपातीत भेदभाव, हवं भाषेभाषेत ममत्व. असा नवा साम्यवाद आमच्यात मातीत गंध घेऊन उमलावा. ज्यानं पुरातन काळासारखं आधुनिक युगातही जगाचं नेतृत्त्व करावं ऽ''[1] (हमें चाहिए एक शक्तिसंपन्न संघराज्य, जहाँ किसानों और मजदूरों की हिमायत करनेवाली जागरूक सरकार हो; रूस की तरह पंचवार्षिक नियोजन हो, देश में आधारभूत उद्योगों तथा औद्योगीकरण की बुनियाद डाली जाय, ग्रामोद्योगों को भी प्रोत्साहन मिले, जनसंख्या की वृद्धि पर समायोचित अंकुश लगाया जाए, जात-पाँत का भेदभाव समाप्त हो, विभिन्न भाषा-भाषियों में अपनत्व बढ़े। अपनी ही माटी की गंध से रचा-बना हम ऐसा साम्यवाद ले आएँ जो प्राचीन काल की ही भाँति आधुनिक काल में भी विश्व का नेतृत्व करें।) सुभाषबाबू के मन में स्वतंत्र भारत तथा उसकी विकास की दृष्टि से हर एक क्षेत्र को लेकर नियोजन था। यह नियोजन राष्ट्र की उन्नति का एक प्रशस्त मार्ग था। स्पष्ट है कि उपर्युक्त विचार सुभाषबाबू के राष्ट्र विषयक विचारों की पुष्टि करते हैं।

सुभाषबाबू हर कीमत पर भारत को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराना चाहते थे। साथ ही उन्हें भारत देश का विभाजन होना मंजूर नहीं था। वियेना आए हुए विठ्ठलभाई पटेल 'देशविभाजन' के प्रसंग को लेकर सुभाषबाबू की राय जानना चाहते हैं। इसके प्रत्युत्तर

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 157

में सुभाषबाबू कहते हैं - ''शरीरात रक्ताचा शेवटचा थेंब असेपर्यंत मी माझ्या मंगल मातृभूमिचे तुकडे होऊ देणार नाही. माझं तन, मन, धन सारं काही पणाला लावेन !''[1] (शरीर में रक्त की अंतिम बूँद रहने तक मैं अपनी पावन मातृभूमि के टुकड़े नहीं होने दूँगा। इसके लिए मैं अपना तन, मन, धन सब कुछ दाँव पर लगा दूँगा।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि सुभाषबाबू के विचार एकता की हिमायत करते हैं। उन्हें किसी भी कीमत पर देश विभाजन मंजूर नहीं था।

देश विभाजन न हो यह सभी भारतीयों की इच्छा होती है। देश विभाजन को लेकर इटली में इकबाल सिदेई और सुभाषबाबू में चर्चा होती है। उसी समय इकबाल सिदेई स्वयं भारतीय होकर पाकिस्तान हमारा है बल्कि हिंदुस्तान तुम्हारा है इस बात का उल्लेख करता है। इकबाल सिदेई के वक्तव्य से उत्तेजित हुए सुभाषबाबू उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - ''एकसंघ भारत हे माझं जीवन स्वप्न आहे. यापुढे तुम्ही मला भेटा वा भेटू नका; पण एक लक्षात ठेवा. सुभाष बोस या गृहस्थासमोर पाकिस्तान या शब्दाचा उच्चारसुद्धा करण्याचं पुन्हा धाडस करु नका.''[2] (अखंड भारत यह मेरे जीवन का चिर-संचित स्वप्न है। इसके बाद तुम मुझे मिलो या न मिलो, पर एक बात ध्यान में रखना। सुभाष बोस नामक व्यक्ति के सामने 'पाकिस्तान' शब्द का उच्चारण भी करने का साहस फिर मत करना।) उक्त कथन से सुभाषबाबू के प्रबल राष्ट्रीयता तथा भारत देश की अखंडता आदि विषयक विचार दिखाई देते हैं।

ब्रिटिशों की गुलामी से मुक्त होने के लिए महात्मा गांधीजी से मतभेद होने के बावजूद भी वे जर्मनी जाकर हिटलर से मदद माँगते हैं, जर्मनी में मदद न मिलने पर वे जपान जाते हैं। वहाँ प्रधानमंत्री तेजो से मिलते हैं। आपने हिटलर, मुसोलिनी जैसे तानाशाहों की मदद माँगी यह तेजों के प्रश्न पूछनेपर प्रत्युत्तर में उन्हें संबोधित करते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - ''मी हुकूमशहांची मदत कशाला, परंतु देशाच्या स्वातंत्र्यासाठी प्रत्यक्ष सैतानाशी सलगी करायला अजिबात मागंपुढं पाहणार नाही. कारण माझी सदूसदविवेक बुध्दी मला सांगते सैतानसुध्दा ब्रिटिश साम्राज्या इतका कपटी आणि घातकी असूच शकत नाही !''[3] (अपने देश की स्वतंत्रता के लिए तानाशाहों से नहीं बल्कि स्वयं शैतान से भी हाथ मिलाने में मैं तनिक भी आगे-पीछे

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 169
2. वही, पृष्ठ - 138
3. वही, पृष्ठ - 403

नहीं देखूँगा, क्योंकि मेरा सदूविवेक मुझसे कहता है - शैतान भी ब्रिटिश साम्राज्य जितना कपटी और घातक नहीं हो सकता।) उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि किसी भी तरह से भी क्यों न हो हमें गुलामी से मुक्त होना चाहिए। फिर इसके लिए भले शत्रू से भी मदद लेनी पड़े तो भी कोई बात नहीं। अत: सुभाषबाबू के ये विचार राष्ट्रनिष्ठा के ही परिचायक है।

सुभाषबाबू जपान में जाने के बाद देश की स्वतंत्रता के लिए 'आजाद हिंद फौज' का निर्माण कराना चाहते हैं। इसके लिए शस्त्रास्त्र खरीदने तथा सैनिकों को युद्ध में खाने के लिए अन्नधान्य खरीदने तथा 'आजाद हिंद फौज' के गठन के लिए पैसों की आवश्यकता थी। इस कारण सुभाषबाबू सिंगापुर के पडांग मैदान में स्थित भारतवासियों को संबोधित करते हुए कहते हैं - ''आजादीचा हा महायज्ञ पूर्णत्वास न्यायचा असेल तर त्यासाठी स्वातंत्र्य हिंदुस्तानचं हंगामी सरकार आताच स्थापन करायला हवं ! बंधुनों ऽऽ पूर्व एशियातील तीस लाख हिंदी बांधवांनी पुढं येऊन, साधनसामग्री गोळा करुन ब्रिटिश फौजेला चारीमुंड्या चीत करण्यासाठी सर्वकष तयार केली पाहिजे. त्यासाठी मित्रानों ऽऽ, उठा ऽ, दान करा. मला मनुष्यबळ हवं, द्रव्यबळ हवं, साधनसामग्रीची भरघोस शिदोरी हवी."[1] (आजादी के इस महायज्ञ को पूर्णता तक पहुँचाना है तो उसके लिए स्वतंत्र हिन्दुस्तान की अस्थायी सरकार की स्थापना अभी ही करनी होगी। भाइयों, पूर्वी एशिया के तीस लाख हिंदुस्तानियों को आगे आकर, साधन सामग्री एकत्र करने के लिए व्यापक तैयारी करनी चाहिए। इसके लिए मित्रों, उठो ! मुक्तहस्त दान करो! मुझे मनुष्यबल चाहिए, धन चाहिए, साधन सामग्री का सम्बल चाहिए।) सुभाषबाबू के उपर्युक्त कथन से हमें समज में आता है कि ब्रिटिश शासन की गुलामी से मुक्त होना ही उनका एकमात्र लक्ष्य था। अत: उपर्युक्त उनके ये विचार राष्ट्रनिष्ठा की हिमायत करते हैं।

देश को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए तथा देश की स्वतंत्रता के लिए सुभाषबाबू 'आजाद हिंद फौज' का निर्माण करते है। इसमें अनेक युवकों तथा महिलाओं को भी शामिल कराते हैं। उनके परेड के दौरान 'आजाद हिंद फौज' के सिपाहियों (स्त्री-पुरूषों) को संबोधित करते हुए कहते हैं - ''तुम्ही मला रक्त द्या ! मी तुम्हाला स्वातंत्र्य देतो !"[2] (तुम मुझे खून दो! मैं तुम्हें आजादी दूँगा !) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि 'आजाद हिंद फौज' के नौजवानों को

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 415-416
2. वही, पृष्ठ - 428

देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाने कि बात करते हैं। वे देश की स्वतंत्रता के लिए अपना खून भी बहाने के लिए पिछे न हटने की नवयुवकों को प्रेरणा देते हैं।

अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए युद्ध के संग्राम में न सिर्फ युवक शामिल होना चाहते थे तो युद्ध में लूले-लगडे भी शामिल होना चाहते थे। जिन्होंने इसके पहले युद्ध में ही अपना पाँव गँवाया है यह एक हमारे देश का कडुआ सच हैं। शाहनवाज 'आजाद हिंद फौज'को लेकर युद्ध के लिए ब्रह्मदेश की ओर जा रहे थे तब कुछ अपंग सैनिक रेल की पटरियोंपर धरना दिए बैठे थे। शाहनवाज ने उन्हें वहाँ से हटने के लिए कहा तब वे अपने देश के प्रति जो आस्था है उसे प्रकट करते हुए कहते हैं - ''ब्रिटिशांसाठी लढताना सिंगापूरच्या लढाईत मी एक पाय गमावला आहे. आता दुसरा पाय नव्हे माझा प्राणही मी आपल्या नेताजींसाठी अर्पू इच्छितो ! कृपा करुन मला मागं ठेवू नका. सोबत घेऊन चला."[1] (अंग्रेजों के लिए लड़ते हुए मैंने सिंगापुर की लड़ाई में एक पाँव गँवा दिया है। अब मैं अपना दूसरा पाँव ही नहीं, अपने प्राण भी नेताजी को अर्पित करना चाहता हूँ। मेहरबानी करके मुझे छोड़कर न जाएँ, अपने साथ ले चले।) उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि भारतीय सैनिक के बूँद-बूँद में देशाभिमान की लहर दौड़ रही थी। चाहे वह सैनिक अपाहिज क्यों न हो। अत: हमें इन विचारों में राष्ट्रनिष्ठा की प्रबल भावना परिलक्षित होती है।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस अपने देश को अंग्रेजों से मुक्त करने के लिए 'आजाद हिंद फौज' के लिए पुरुषों (युवकों) जितना महत्त्वपूर्ण स्थान है उतना ही लड़कियों को भी देश स्वतंत्रता की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण मानते थे। मानवती आर्य 'आजाद हिंद फौज' में भर्ती होने की ईच्छा अपने पिता को प्रकट करती है तथा उसके लिए अनुमति मिलती है। मानवती आर्य को ले जाने के लिए आए नेताजी को संबोधित करते हुए उसके पिता कहते हैं - ''नेताजी आमच्या पोटी फक्त मुलगीच आहे, मुलगा असता, तर तो ही आपल्या बहिणीसोबत आजादीची जंग करायला बाहेर पडला असता."[2] (नेताजी, हमारे यहाँ तो सिर्फ बेटी ही है। बेटा होता तो वह भी अपनी बहन के साथ ही युद्ध करने के लिए निकल पड़ता।) उक्त कथन से समजने में देर नहीं लगती कि अपने देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने के लिए तैयार मानवती के पिता के मुख से शब्द राष्ट्र विषयक विचार स्पष्ट होते हैं।

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 406
2. वही, पृष्ठ - 480

अमेरिका द्वारा नागासकी और हिरोशिमा पर बम वर्षा होती है। नेताजी रशिया के लिए बार्मी आर्मी मंत्री शिडोई के साथ विमान से जाते है। चर्चा के दौरान शिडोई को संबोधित करते हुए नेताजी कहते हैं - "मला जीवंत वा मृत पकडण्यासाठी माऊंटबॅटन आणि चर्चिलचा जीव जळतो आहे, परंतु त्या पाप्यांना माझ्या प्रेताचंही दर्शन घडायचं नाही, हिन्दुस्थानच्या मातीतून सहस्त्र सुभाष जन्मतील. इंग्रजांना एक ना एक दिवस घरचा रस्ता धरावा लागेल. इंडिया विल बी फ्री अँड दॅट इज बिफोर लाँग-हिंदुस्तान आझाद होईल आणि तोही लवकरच ऽ!"[1] (वस्तुतः मुझे जीवित या मृत हासिल करने के लिए माऊटबेटन और चर्चिल के प्राण अकुला रहे हैं, परंतु उन पापियों के भाग्य में मेरे शव का दर्शन भी नसीब नहीं है। हिंदुस्तान की मिट्टी से सहस्त्र सुभाष जन्म लेंगे, और एक न एक दिन अंग्रेजों को अपने घर की राह पकड़नी ही होगी। इण्डिया विल बी फ्री, ऐण्ड दैट्ज बिफोर लाँग - हिंदुस्तान आजाद होगा और वह भी शीघ्र ही!) उक्त कथन में सुभाषबाबू के मन में निहित अंग्रेजों के खिलाफ का उद्वेग व्यक्त हुआ है। अन्यायी और शोषक अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उनका द्वेष तथा अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता की उनकी प्रबल इच्छा यहाँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

4.2 श्रम विषयक विचार :

जो लोग शारीरिक श्रम कर अपनी जीविका का उदरनिर्वाह करते हैं उन्हें श्रमिक कहा जाता है। श्रमिक लोगों के बारे में किया गया विचार, चिंतन श्रमिक विमर्श है और उनके श्रम के संबंध में किया गया विचार चिंतन श्रम विषयक विचार कहा जाता है।

4.2.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित श्रम विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में श्रम विषयक विचारों की प्रधानता मिलती है। इस उपन्यास में दक्षिण अफ्रीका में पाँच साल के गिरमिट पर गए भारतीय गिरमिटियों के अन्याय, अत्याचार तथा शोषण आदि का चित्रण अधिक मात्रा में दिखाई देता है। श्रमिकों पर मालिकों द्वारा अन्याय, अत्याचार तथा शोषण आम बात बन गई हैं। भारतीय गिरमिटियें दक्षिण अफ्रीका में पाँच साल गिरमिट पर जाते हैं। उन पर वहाँ अन्याय, अत्याचार होते हैं। मालिक के खिलाफ विरोध करने पर भी गिरमिटियों पर मुकदमा चलाया जाता था।

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 674

मुजरिम करार दिए जाने पर उन पर जुर्माना किया जाता था। गिरमिटियों के साथ अमानवीय अत्याचार किया जाता था। इन गिरमिटियों की दयनीय स्थिति के बारे में स्वयं गिरिराज किशोर लिखते हैं - ''अगर एक या सब गिरमिटिया बिना छुट्टी लिये मालिक या मालिकों की शिकायत दर्ज कराने काम पर से गैरहाजिर होते हैं तो उन पर मुकदमा चलाया जा सकता था, मुजरिम करार दिये जानेपर दो पौण्ड तक जुर्माना हो सकता था या फिर दो महिने बामुराक्कत कैद या साधारण सजा दी जा सकती थी।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि दक्षिण अफ्रीका मे स्थित गिरमिटियों के शोषण और अत्याचार का लेखक ने वास्तवदर्शी चित्रण किया है। जुर्माना देना पड़ेगा या कैद होगी इस भय से गिरमिटिया लोग मालिक के खिलाफ शिकायत दर्ज करने से डरते थे। इसके परिणाम स्वरूप मजदूर गिरमिटियों में अन्याय-अत्याचार तथा शोषण के खिलाफ विद्रोह करने का साहस नहीं दिखाते थे।

दक्षिण अफ्रीका में काम कर रहे गिरमिटियों में सिर्फ पुरुषों का ही शोषण नहीं होता था बल्कि बच्चों और स्त्रियों की भी हालत दयनीय थी। औरतों को उनके सामर्थ्य के अनुसार काम करना पड़ता था। आपत्ति करनेवाली स्त्रियों पर चोरी का इल्जाम लगाकर उनके पैसे काट लिए जाते थे। इसके परिणामस्वरुप वे स्त्रियाँ उन पर हो रहे अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने का साहस नहीं करती थी। एक तो अपने देश से दूर दूसरे देश में काम करना और मालिक अगर काम से निकाल देता है तो दूसरी जगह काम न मिलने की नौबत थी। इस कारण वे कुछ नहीं कर पाते थे। स्त्रियों तथा बच्चों की हालत के बारे में स्वयं लेखक लिखते हैं - ''औरतों और कम उम्र कुलियों से उनके सामर्थ्य के अनुसार काम लिया जाएगा। कुछ उदाहरण भी दिये गये थे। गन्ना काटना, गन्ने की पुलियाँ ढोना, ट्रक में लादना, पानी चलाना, घास काटना आदि। लेकिन ये सब नियम उनके उल्लंघन में ही सार्थक थे। औरतें अपने सामर्थ्य से अधिक बोजा उठाकर लड़खड़ाती चलती थी। आपत्ति करनेपर चोरी का इल्जाम लगाकर पैसे काट लिए जाते थे। गालियाँ और धौल-धप्पड दिनचर्या का हिस्सा था। मगर इसमें कोताही होती थी तो मालिक की शराफत के कारण जिसे लोग नाकामी और दब्बूपन का नाम देते थे।"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि इसमें स्त्रियों की दयनीय दशा का परिचय मिलता है। मालिको द्वारा स्त्रियों का शोषण निरंतर होता था और अपनी विवशता के कारण किसी भी स्त्री में उसके खिलाफ आवाज उठाने का साहस दिखाई नहीं देता है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 370
2. वही, पृष्ठ - 370

सदियों से श्रमिक अन्याय-अत्याचार तथा अन्याय-शोषण का शिकार हुए हैं और आज भी पर्याप्त मात्रा में हो रहे हैं। श्रमिकों के उद्धार के लिए कितने भी प्रयास क्यों न किए गए हो लेकिन उसमें आज तक सुधार नहीं हुआ है बल्कि अमीर अधिक अमीर बनते जा रहे हैं और मजदूर गरीब ही होता जा रहा है। दक्षिण अफ्रीका में जो औरतें गिरमिटियों के रूप में काम करती थी। बेबस और लाचार जिंदगी जीने के लिए अभिशप्त उन स्त्रियों का जीवन नरकीय था। भेड़ बकरियों की तरह गुजारा करनेवाली उन स्त्रियों की हालत के बारे में स्वयं गिरिराज किशोर कहते हैं - ''विवाहित जोड़ो का सिरदार और ओवरसियर छड़े मर्दों में बाँट देते थे। कई बार विवाहित औरतों को भी इस बन्दर-बाँट से नहीं बच पाती थीं। एक औरत कम-से-कम तीन और अधिक से अधिक पाँच कुलियों के बीच रखी जाती थी। किन मर्दों के साथ किस औरतों को रखा जाएगा उसका निर्णय भी मालिक के करिन्दों के हाथ में रहता था। मालिकों का तर्क था कि चार-पाँच मर्दों के बीच एक औरत भी काम करती हो तो शान्ति बनी रहती हैं।''[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि श्रम करके अपनी जीविका चलानेवालों को कितना संघर्ष करना पड़ता है। सीमाहीन संघर्ष भी शायद उसके जीवन के दु:खों को पूर्णविराम देने में सफल नहीं होता। आजीवन काम करके ही जीवन जीते रहते हैं। स्पष्ट है कि लेखक ने गिरमिटियों की दयनीय जिंदगी का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।

दक्षिण अफ्रीका में 'इण्डेंचर्ड ला' के कानून के अनुसार पति-पत्नी और बच्चों को अलग करने की अनुमति नहीं दी जाती थी। मालिक लोग कानून हाथ में लेकर पति-पत्नी और बच्चों को अलग कर देते थे। उपजीविका के लिए लोगों को अपनी ईच्छा के विरूद्ध अलग-अलग स्थान पर काम करना पड़ता था। इस कारण उनमें अनेक प्रकार की यौन बीमारियाँ देखने को मिलती थी - ''पत्नी, पति, बच्चे कहीं भी भेजे जा सकते थे। काम तो वही जो मालिक चाहे। इसी का नतीजा था कि गिरमिटिये यौन बिमारियों के शिकार थे बच्चों के मरने की प्रतिशतता इतनी अधिक थी कि किसी को पता नहीं था कि किसका बच्चा जियेगा और किसका मरेगा। माँए बच्चों को लेकर सवेरे चार बजे से रात तक खुले आसमान के नीचे काम करती थीं। कुछ बच्चों को सर्दी लील जाती थी कुछ को गर्मी मार डालती थी।''[2] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि वहाँ न केवल स्त्रियों एवं पुरुषों की हालत दयनीय थी बल्कि बच्चों की भी

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 370
2. वही, पृष्ठ - 371

हालत दयनीय थी। उनमें यौन बीमारियाँ फैलना निश्चय ही समाज के लिए तथा स्वयं के लिए घातक सिद्ध होता है इसमें संदेह नहीं।

गिरमिटियों का असीम अन्याय-अत्याचार तथा शोषण होता था। यहाँ तक कि गिरमिटिया गिरमिट तोड़कर जेल में रहना भी पसंद करते थे। एक गिरमिटिया जेल से छुटने पर फिर गिरमिट तोड़ता था, फिर जेल में जाता था और यही सिलसिला शुरू रहता था। मॅजिस्ट्रेट के पूछने पर वह गिरमिटिया अपनी व्यथा सुनाते हुए कहता है - ''हुजूर, मुझे सजा-ए-मौत दे दीजिए पर मालिक के पास जाने के लिए न कहिए, वह कसाई है।''[1] कहना आवश्यक नहीं कि दक्षिण अफ्रीका में स्थित गिरमिटिये मालिक के अत्याचार तथा शोषण से त्रस्त थे। मालिक उन्हें बहुत यातनाएँ देते थे। इन यातनाओं के परिणामस्वरुप ही वे जेल में रहना पसंद करते थे।

4.2.2 'महानायक' में चित्रित श्रम विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में श्रमविषयक विचारों की अभिव्यक्ति कम अधिक मात्रा में क्यों न हो, अवश्य दिखाई देती है। व्यक्ति से समाज बनता है और समाज से देश । अत: इस समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा श्रमिक और बहुजन समाज है। इनकी उन्नति ही पूरे देश की उन्नति है। सुभाषबाबू घोष नामक रिश्तेदार के यहाँ 'विवेकानंद ग्रंथावली' में श्रमिकों के विचार पढ़ते है और उन विचारों की ओर स्वयं भी आकर्षित होते हैं। उसमें विवेकानंद जी स्वयं श्रमिकों के बारे में लिखते हैं - ''गरिबांची कणव न घेणारा हा देश आहे, की नरक ? श्रमिकांना हक्क नाकारणारा हा धर्म आहे, की सैतानाचं तांडव ? देश म्हणून आम्ही आमची प्रतिमाच गमावून बसलो आहोत ! या मातीतील बहुजनांच्या जागृतीसाठी साद घाला. उठवा सामान्यजनांना ! दया आकार पुन्हा आपल्या मातृभूमिला''[2] (गरीबों पर दया न करनेवाला यह देश, देश है या नरक ? श्रमिकों के अधिकारों को नकारनेवाला यह धर्म, धर्म है या राक्षी ताण्डव ? देश के रूप में हम अपनी छवी ही गँवा बैठे हैं। इस मिट्ठी के बहुजन समाज को जागृति के लिए बुलंद करो, सामान्य जनो, उठो और पुन: सँवारों अपनी प्रिय मातृभूमि को !) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि हमें देश की प्रगति करनी है तो हमें श्रमिकों के साथ-साथ बहुजन विकास की ओर भी ध्यान देना जरूरी हैं।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 374
2. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 26

आज देश में हर क्षेत्र में स्त्री ने अपना अस्तित्व सिद्‌ध कर दिया है। सुभाषबाबू मानते हैं कि देश को प्रगति की ओर अग्रेषित करना है तो स्त्रियों को हमें देश की सेवा करने में तथा हर क्षेत्र में भाग लेने से प्रेरित करना होगा। स्त्री शक्ति की महत्ता अपनी भाभी को बताते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - ''परंतु मला असं वाटतं, तीस कोटींचे साठ कोटी हात एकत्र आले, तर काय बहार होईल ! प्रचंड श्रमशक्तिमुळे आमचा देश जगातलं एक अग्रेसर आणि प्रगत राष्ट्र बनेल ऽ!''[1] (परंतु मुझे ऐसा लगता है कि तीस करोड़ लोगों के साठ करोड हाथ एकजुट हो जाए तो क्या नहीं कर सकते हम ? इस प्रबल श्रमशक्ति का सही उपयोग हो तो हमारा देश विश्व को एक अग्रगामी उन्नत राष्ट्र बन जाएगा।) कहना सही होगा कि सुभाषबाबू की राष्ट्रीय एकता संबंधी भावना एवं स्त्रियों के महत्त्वपूर्ण अवदान की कल्पना सराहनीय माननी होगी। साथ ही वे स्त्रियों को तो युद्‌ध में उतारने की भव्यता को भी उजागर करते हैं।

4.3 विद्रोह विषयक विचार :

प्रचलित अव्यवस्था, अन्याय, शोषण, अत्याचार, अनीति तथा अनाचार आदि का विरोध करना तथा उसके खिलाफ लड़ने का प्रयास ही विद्रोह है। दूसरे शब्दों में अगर कहना हो तो उपन्यास में निहित जिन विचारों से विद्रोह व्यक्त होता हैं उन विचारों को विद्रोहविषयक विचार कहा जाता है।

4.3.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित विद्रोह विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' के मोहनदास में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सदाचार आदि गुण दिखाई देते हैं। फिर भी उपन्यास में गिरमिटियों द्‌वारा दक्षिण अफ्रीका के सरकार के कायदे कानून के विरोध में विद्रोह दिखाई देता है। दक्षिण अफ्रीका के ट्रांसवाल में रहनेवाले गिरमिटियों को तथा व्यवसायिकों को एशियाटिक कानून लागू किया जाता है। इस कानून के तहत वहाँ रह रहे गिरमिटियों को रजिस्ट्रेशन कराना अनिवार्य किया जाता है। जो गिरमिटिया या व्यवसायिक राजिस्ट्रेशन नहीं करेगा उसे अन्न-धान्य जैसी सुविधाओं से वंचित रखा जाता था। मोहनदास गिरमिटियों में एकता प्रस्थापित कर रजिस्ट्रेशन के दुष्परिणाम तथा आजादी छिनने की साजिश आदि के बारे में जानकारी बताते हैं। वहाँ स्थित गिरमिटियों

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 108

में से एक गिरमिटिया उत्तेजित होकर उग्र स्वर में कहता हैं - "अगर किसी ने मेरे घर में घुसकर मेरी घरवाली से रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट माँगने की बात तो दूर, कलाम करने की भी जुर्रत की तो मैं उसे वही कत्ल कर दूँगा। बाद में फाँसी लटकना मंजूर।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि गिरमिटियों पर लगातार अन्याय और अत्याचार होता रहता है। लेकिन उनके अन्याय को वाणी देने का काम आज तक किसी ने नहीं किया था। मोहनदास जब उनमें इस अन्याय के खिलाफ लड़ने की चेतना जगाते हैं तब ये गिरमिटिये अन्याय के खिलाफ कड़ा विद्रोह करने के लिए तैयार होते हैं, चाहे फिर इसके बदले उन्हें किसी भी हद तक क्यों न जाना पड़े।

4.3.2 'महानायक' में चित्रित विद्रोह विषयक विचार -

'महानायक' उपन्यास में विद्रोह विषयक विचार पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। उपन्यास का नायक सुभाषबाबू जो क्रांतिकारी पात्र है। सुभाषबाबू अन्याय, अत्याचार तथा शोषण का खुलकर विरोध करते हैं। राष्ट्र के प्रति असीम आस्था होने के कारण ही सुभाषबाबू विद्रोही बनते है। स्वाधीनता के पूर्व ब्रिटिश अधिकारियों के खिलाफ सुभाषबाबू का विद्रोह पग-पग पर दिखाई देता है। एक दिन ब्रिटिश अधिकारी माऊटबेटन से सुभाषबाबू की मुलाकात होती है तब भारत देश तथा स्वतंत्रता आदि की चर्चा करते वक्त अनायास ही सुभाषबाबू के मुख से विद्रोहन्मुख विचार निकलते हैं। वे माऊटबेटन से कहते हैं - "आम्हाला कोंडमारा असह्य होतो. संधी मिळताच आम्ही तो जुलमी पाय मुळापासून उखडून काढू."[2] (हमारे लिए यह दम घोंटनेवाला माहौल असह्य हो चला है। अवसर मिलते ही हम उन अत्याचारी पाँवो को जड़ से उखाड़ फेकेंगे।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि सुभाषबाबू के मन में अंग्रेजी हुकूमत के प्रति तीव्र आक्रोश का भाव प्रकट होता है। वे अंग्रेजों की गुलामी में बंदी बनकर नहीं रहना चाहते। सुभाषबाबू का कहना है कि हम अन्याय-अत्याचार की जड़ों को उखाड़ फेंक देंगे।

सुभाषबाबू काँग्रेस के अध्यक्ष बनते हैं। इसी अवधि में महात्मा गांधी जी म्युनिक करार पर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकृति देते हैं। महात्मा गांधी जी के करार पर हस्ताक्षर कराने के कारण सुभाषबाबू उनसे सहमत नहीं थे। तब सुभाषबाबू अप्रत्यक्ष रूप में महात्मा गांधीजी की ओर संकेत करते हुए कहते हैं - " संघ राज्यासारखी देशाच्या हिताला बाधक

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 636
2. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 72

तडजोडीची पातकं कोणी करु पाहतील, तर त्या पापाचं वाटेकरी होणं मला कदापिही आवडणार नाही. मी सरळ राजीनामा देईन. मला आपण मुक्त करावं."[1] (संघराज्य जैसे देशहित-विरोधी जोड़तोड का पातक करते मैं यदि किसी को देखूँगा, तो उस पातक का भागिदार होना मुझे कदापि स्वीकार्य नहीं होगा; मैं सीधे त्यागपत्र दे दूँगा। आप मुझे मुक्त करें।) सुभाषबाबू का विद्रोह राष्ट्रहित को बाधा पहुँचानेवाले करार एवं नियमों के खिलाफ दिखाई देता है।

सुभाषबाबू एवं महात्मा गांधी जी के विचारों में पर्याप्त अंतर दिखाई देता है। सुभाषबाबू क्रांतिकारी विचारों को माननेवाले थे जब कि महात्मा गांधी जी अहिंसात्मक। दोनों का काँग्रेस मे एक साथ काम करना सहज संभव नहीं था। इन दोनों के विचारों में बहुत अंतर था। सुभाषबाबू जर्मन से आए हुए दो हिटलर के अधिकारियों को मिलते हैं। वियेना में सुभाषबाबू ने 'इंडियन स्ट्रँगल' पुस्तक लिखी थी। उस पुस्तक में आए हुए महात्मा गांधी जी विषयक विचार कृपालानी तथा काँग्रेस कमिटी के एक अन्य सदस्य मल्लूभाई दूवारा महात्मा गांधी जी को दिखाने के कारण सुभाषबाबू और महात्मा गांधी जी में मतभेद निर्माण होते है। महात्मा गांधी जी नहीं चाहते थे कि सुभाषबाबू पुनः काँग्रेस अध्यक्ष हो। फिर भी सुभाषबाबू काँग्रेस से चुनाव लड़कर पट्टभि के विरोध में निर्णायक वियज प्राप्त करते हैं। अखबार में सुभाषबाबू के बारे में प्रतिक्रिया देते हुए महात्मा गांधी जी लिखते हैं - " सुभाषचंद्र बोस यांनी पट्टभिच्या विरोधात निर्णायक विजय मिळवला आहे. मी अगदी ठरवूनच पहिल्यापासून त्यांच्या फेरनिवडीच्या विरोधात होतो. शिवाय पट्टभिना त्यांची उमेदवारी मागे घेऊ न द्यायला सर्वस्वी मीच कारणीभूत ठरलो होतो. म्हणूनच हा पराभव पट्टाभीचा नसून तो माझ्या स्वतःचाच असल्याचं मी समजतो."[2] (सुभाषचंद्र बोस को पट्टभि के विरूद्ध निर्णायक विजय प्राप्त हुई है। मैं प्रारंभ से ही उनके पुनः चुने जाने के विरोध में था। पट्टभि को उम्मीदवारी वापस न लेने देने के पीछे एकमात्र कारण मैं ही था, इसलिए मैं समझता हूँ कि यह पट्टभि की नहीं बल्कि स्वयं मेरी पराजय हैं।) महात्मा गांधी जी के कथन में सौम्य क्यों न हो लेकिन विद्रोह दिखाई देता है।

भारतीय नौजवान के बारे में कहना सही होगा कि वे किसी के सामने झुकते नहीं है। फिर वह भले बड़े से बड़ा अधिकारी भी क्यों न हो। उनके खून में हमें स्वाभिमान ही

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 209
2. वही, पृष्ठ - 219

स्वाभिमान दिखाई देता है। भवलपुर में स्थित 'आजाद हिंद फौज' के परेड़ के दौरान वहाँ जपानी अधिकारी आकर फौजी जमादार को सैल्यूट करने को कहता है। जमादार जपानी अधिकारी को सैल्यूट करने से इन्कार तो करता है ही। जमादार उस जपानी अधिकारी को संबोधित करते हुए जमादार कहता हैं - " मेलो तरी मी जुलमाला रामराम ठोकणार नाही."[1] (मर जाऊँगा तो भी किसी को किसी के डर से सलाम नहीं करुँगा।) जमादार के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु तथा गुलामियता न सहने के कारण जमादार के विचारों में विद्रोहोन्मुख विचार दिखाई देते हैं।

सत्ता के सामने मनुष्य को भाई, बहन, मित्र आदि किसी रिश्ते की याद नहीं रहती। सुभाषबाबू और जवाहरलाल नेहरू आजादी की प्राप्ति के उद्देश्य से दोनों काँग्रेस में एक साथ काम करते थे। उन दोनों के कारण ही काँग्रेस की ओर युवा वर्ग आकृष्ट था। उन दोनों के कारण ही काँग्रेस के युवाओं में एकता दिखाई देती थी। सुभाषबाबू के गांधी जी से मतभेद होने पर सुभाषबाबू जपान जाते हैं। कृष्ण मेनन सुभाषबाबू को उनके बारे में छपी 'हिंदुस्तान टाईम्स' की कातरण दिखाते हैं। उनमें पंडित जवाहरलाल नेहरु सुभाषबाबू के बारे में लिखते हैं - "सुभाषचा उद्देश्य, हेतु, अंतकरण कितीही पवित्र असले, तरी उदया तो जर जपानी लष्कर घेऊन भारतात प्रवेश करणार असेल. तर सुभाषशी तलवारीचे दोन हात करायला मी कचणार नाही."[2] (सुभाष का उद्देश्य, हेतु और अंतकरण कितना भी पवित्र हो, परंतु कल यदि वे जपानी फौज लेकर भारत में प्रवेश करते हैं तो उनसे तलवार के दो हाथ करने में झिझकूँगा नहीं।) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि सुभाषबाबू द्वारा जपानी शासन से मदद लेना, उनके सैनिकों को अपने 'आजाद हिंद फौज' में शामिल करना, पंडित नेहरु को पसंद नहीं था। अत: उनके उपर्युक्त कथन में अपने मित्र सुभाषबाबू के बारे में विद्रोह दिखाई देता है।

जपान के अधिकारी सुभाषबाबू को 'आजाद हिंद फौज' निर्माण में सहायता करते हैं। जपान सरकार यह भी चाहती है कि जपानी फौज के कायदे कानून 'आजाद हिंद फौज' के लिए लागू होंगे। यह बात सुभाषबाबू को मालूम होती है। तब उत्तेजित हुए सुभाषबाबू अपने आजाद हिंद के फौजी मित्रों को संबोधित करते हुए कहते हैं - " काय वाट्टेल ते संकट ओढवलं तरी बेहत्तर, परंतु जपानच्या लष्करी कायद्यासमोर आम्ही कदापिही मान झुकवणार नाही."[3] (जो भी संकट आना है, उसका सामना करना बेहतर होगा, परंतु हम जपानी कायदे के

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 470
2. वही, पृष्ठ - 471
3. वही, पृष्ठ - 476

समक्ष कदापि सिर नहीं झुकाएँगे।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि सुभाषबाबू को किसी भी गुलामी तथा किसी के भी दबाव में काम करना पसंद नहीं आता था। अत: सुभाषबाबू के विचारों में हमें विद्रोहात्मकता का स्वर दिखाई देता है।

4.4 परिवर्तन विषयक विचार :

परिवर्तन सृष्टि का नियम है। परिवर्तन की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। जैसे सृष्टि में, समाज में परिवर्तन होते हैं वैसे साहित्य में भी होते रहते हैं। साहित्य में भी परिवर्तन निरंतर होता आया है। वस्तुत: परिवर्तन की ओर ले चलनेवाला विचार ही परिवर्तन विषयक विचार है।

4.4.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित परिवर्तन विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में परिवर्तन विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है। मोहनदास दक्षिण अफ्रीका में एक साल के गिरमिट पर दादा अब्दुला के केस के सिलसिले में जाते हैं। वहाँ पर उन्हें श्वेत-अश्वेत (काले-गोरे) का भेदभाव प्रखरता से दिखाई देता है। उन्हें अश्वेत होने के कारण मुश्किल से होटल में प्रवेश मिलता है। उन्हें 'जॉन्स्टन फेमिली' होटल में प्रवेश इस शब्द पर मिलता है कि वे अपना खाना कमरे में ही खायेंगे। डायनिंग टेबल पर होटल मालिक द्वारा मोहनदास के विषय में जानने पर सभी गोरे उन्हें अपने साथ खाना खाने की इजाजत देते हैं। तभी होटल मालिक जॉन्स्टन आकर मोहनदास से कहता है - "मैंने आपसे कमरे में खाना भिजवाने के लिए कहा था। बाद में मुझे शर्मिन्दगी महसूस हुई। मैंने अपने मेहमानों को बताया कि होटल में एक भारतीय ठहरा हुआ है। मैंने आप लोगों के कारण उसे कमरे में ही खाना खाने के लिए कहा है। वे फौरन बोले उन्हें ऐतराज नहीं। वे आकर डायनिंग हॉल में खाना खा सकते हैं। आप चलकर वही भोजन करें। जब तक चाहे होटल में भी रह सकते हैं। मुझे खुशी है कि आपके कारण मैं अपने मेहमानों की राय भी जान गया।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि दक्षिण अफ्रीका में श्वेत-अश्वेत (काले-गोरे) का भेद होने के बावजूद भी अब गोरों में धीरे-धीरे परिवर्तन आ रहा है इसमें संदेह नहीं। जॉन्स्टन के कथन से हमें उनमें आया हुआ परिवर्तन दिखाई देता है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 129

मोहनदास देश की उन्नति के लिए मातृभाषा को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। साथ ही व्यापार के लिए अंग्रेजी भाषा के महत्त्व को भी स्वीकार करते हैं। व्यापार की उन्नति के लिए मोहनदास गिरमिटियों में परिवर्तन लाना चाहते हैं। इसलिए वे अंग्रेजी सिखने पर भी जोर देते हैं। मोहनदास गिरमिटियों को संबोधित करते हुए कहते हैं - "मातृभाषा से आत्मीय कोई दूसरी भाषा नहीं। लेकिन आप व्यवसाय करते हैं उसके लिए आप वह भाषा सीखिए जो यहाँ काम-काज की भाषा है, मैं आप सबके लिए अँग्रेजी की क्लासे शुरू कर सकता हूँ। इतनी अंग्रेजी जानना जरूरी है कि आप अपनी बात दूसरों को समझा सकें और दूसरों की बात स्वयं समझ सके। अगर आप व्यक्तिगत स्तरपर पढ़ना चाहे तो मैं वह भी करने को तैयार हूँ।"[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि परंपरागत मूल्यों में जकड़कर रहने के बावजूद अपनी उन्नति करनेवाले आधुनिक मूल्यों का स्वीकार करना कोई गैर बात नहीं है। इसे परिवर्तित मानसिकता का ही उदाहरण इस कथन से मिलता है।

दक्षिण अफ्रीका में मोहनदास के पास फर्स्ट क्लास का टिकट होते हुए भी केवल अश्वेत होने के कारण दो गोरे अधिकारी उन्हें पिटकर रेल से बाहर फेंक देते हैं। इस घटना के खिलाफ आवाज उठाने के लिए रेल अधिकारियों के पास इसकी शिकायत करते हैं; और इस घटना से आए हुए परिवर्तन की जानकारी तैयब सेठ को देते हुए मोहनदास कहते हैं - "रेलवालों से लिखा-पढ़ी करने पर इतना तो फायदा हुआ कि वे इस बात पर राजी हो गये कि जो वेश-भूषा से भारतीय सम्भ्रान्त लगेगा उसे फर्स्ट या सेकेण्ड क्लास का टिकट दिया जाएगा।"[2] उक्त कथन के दूवारा स्पष्ट होता है कि अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के कारण ही रेलवालों में परिवर्तन हुआ है।

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय गिरमिटियों के अन्याय, अत्याचार तथा शोषण को वाणी देने के लिए मोहनदास ने 'इण्डियन ओपीनियन' अखबार शुरू किया था। इसमें सहायक का पद रिक्त था। दक्षिण अफ्रीकन सोंजा श्लेषिन नामक युवती इस पद पर काम करने की इच्छा प्रकट करती है तो मोहनदास दूवारा यह पूछने पर कि तुम्हें अश्वेत के साथ काम करने में कोई दिक्कत नहीं। तब सोंजा श्लेषिन इस बारे में अपना मत प्रकट करती हुई कहती हैं - "काम से श्वेत-अश्वेत का क्या संबंध, काम किसी के साथ भी हो सम्मान की बात है..."[3]

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 163
2. वही, पृष्ठ - 185
3. वही, पृष्ठ - 565

उक्त कथन से समझ में आ जाता है कि सोंजा श्लेषिन के विचार परिवर्तनवादी मानसिकता की हिमायत करते हैं। भारतीय समाज को अपने अधिकारों की जानकारी देने तथा उसे वर्तमान स्थिति से अवगत करनेवाले समाचारपत्र जैसे एक जिम्मेदार क्षेत्र में एक विदेशी युवती सोंजा श्लेषिन का बिना झिझक काम करने के लिए तैयार होना परिवर्तित होती स्थिति का ही प्रतीक है।

4.4.2 'महानायक' में चित्रित परिवर्तन विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू अपने देश विषयक विचारों के कारण परिवर्तन विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है। देश को आजाद करने के लिए अपना सर्वस्व त्यागकर प्राणों की आहूती देनेवाले सुभाषबाबू में अपने देशवासियों को लेकर तथा अपने देश के उन्नति के विषय को लेकर अनेक परिवर्तन-विषयक विचार 'महानायक' में दिखाई देते हैं। सुभाषबाबू काँग्रेस अध्यक्ष बनने के बाद लाहौर काँग्रेस अधिवेशन में युवा वर्ग को गांधी जी के 'संपूर्ण स्वातंत्र्य' प्रस्ताव के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए वे कहते हैं - ''गांधीजींच्या ठरावामध्ये कायदेभंगाच्या चळवळीचा फक्त नामोल्लेख आहे. परंतु जोवर कामगारांच्या, शेतकऱ्यांच्या आणि पददलितांच्या प्रश्नांवर नेमकं बोट ठेवून त्यांना आम्ही राष्ट्रीय प्रवाहात ओढू शकत नाही, जोवर ब्रिटिशांशी असलेले सर्व लागेबांधे तोडून देशामध्ये गोऱ्यांच्या विरोधात आम्ही 'प्रतिसरकार' स्थापन करू शकत नाही, तोवर संपूर्ण स्वातंत्र्याची प्राप्ति कशी व्हावी.''[1] (गांधी जी के प्रस्ताव में अवज्ञा आंदोलन का मात्र नामोल्लेख हुआ है। परंतु जब तक मजदुरों, किसानों और पददलितों की समस्याओं को पहचानकर हम उन्हें अपने राष्ट्रीय प्रवाह में शामिल नहीं करते, जब तक हम अंग्रेजों से सारे संपर्क संबंध तोड़कर गोरे के विरूद्ध एक 'प्रतिसरकार' की स्थापना नहीं करते, तब तक संपूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति कैसे संभव है?) सुभाषबाबू के उक्त कथन से किसानों तथा निम्न जातियों के पक्ष में किए गए परिवर्तनवादी विचार दृष्टिगोचर होते हैं। लोगों के अन्याय-अत्याचार तथा शोषण के प्रति आवाज उठाने का परिवर्तनवादी विचार सुभाषबाबू के कथन से स्पष्ट होता है। अत: सुभाषबाबू के दूवारा किया गया प्रयास सर्वहारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास है।

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 128

किसी भी देश की उन्नति के लिए उस देश का औद्योगिक विकास होना बहुत जरूरी होता है। अन्य प्रगत राष्ट्रों के साथ भूमंडलीकरण के दौर में अपना अस्तित्व बरकरार रखने के लिए भी औद्योगिक विकास की आवश्यकता स्वीकार करनी पड़ती है। दिल्ली में आयोजित औद्योगिक विकास की बैठक में वहाँ स्थित छात्रों को औद्योगिकीकरण से संबंधित विचारों से अवगत करते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - "एकेकाळी आपला देश आधुनिक आणि बलवान बनण्याच्या निर्धारानंच जपानमधील विद्यार्थी कसे देशाबाहेर पडले होते, त्याच जिद्दीनं आणि निश्चित ध्येयानं आमचे हजारों विद्यार्थी परदेशात पाठवायला हवेत. ते जेव्हा पुन्हा देशात परततील तेव्हा आपल्या जादूमय हातांनी देशाच्या औद्योगिक प्रगतीला हातभार लावतील या अशा विद्यार्थ्यांवर शासनाचं नियंत्रण नको. त्यांनी मुक्तपणे औद्योगिकतेचं गीत गावं. त्यासाठीच एका कायमस्वरूपी राष्ट्रीय संशोधन संस्थेची गरज आहे."[1] (किसी समय अपने देश को आधुनिक बनाने का संकल्प लेकर जपान के विद्यार्थी देश से बाहर निकले थे। उसी संकल्प और निश्चित ध्येय से हमारे हजारों विद्यार्थियों को विदेश भेजना चाहिए। वे सब पुन: देश में वापस आएँगे तो अपने जादुई हाथों से देश की औद्योगिक प्रगति में योगदान करेंगे। ऐसे विद्यार्थियों पर सरकार का नियंत्रण अपेक्षित नहीं है। वे उन्मुक्त रूप से औद्योगिकी के गीत गा सके, इसके लिए एक स्थायी स्वरूप के राष्ट्रीय शोध संस्थान की आवश्यकता है।) सुभाषबाबू देश में आवश्यक परिवर्तन लाने हेतु विद्यार्थियों को विदेश भेजने तथा वहाँ से प्रगल्भ ज्ञान का उपयोग करने के पक्ष में हैं। सुभाषबाबू के उक्त कथन से देश में विकास की दृष्टि से परिवर्तनवादी विचारों की हिमायत हुई है।

आज तक हमारे देश में अनेक संतों ने हिंदू-मुस्लिमों में एकता लाने का प्रयास किया है। सिंगापुर के पंडाग मैदान में परेड समाप्त होने पर बिरादरी कैम्प में हिंदु, मुसलमान और सिख लोगों की रसोई तथा खाने की पंगत अलग बैठती थी। तो वहाँ स्थित सभी 'आजाद हिंद फौजियों' में परिवर्तन लाने के लिए या उनमें एकता प्रस्थापित करने के लिए उन्हें संबोधित करते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - "मी ब्रिटिशांना आव्हान देताना हिंदुस्तान एकसंघ असल्याची ग्वाही देतो आणि इकडं आम्ही भोजनाच्या पंगतीलाही एकत्र येत नसू, तर उद्या मृत्युच्या कराल दाढेत कसे एकत्र येणार?"[2] (मैं तो अंग्रेजों को चुनौती देते हुए हिंदुस्तान को एकसूत्र में

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 201
2. वही, पृष्ठ - 414

बँधे होने की दुहाई देता हूँ, और यहाँ जब हम भोजन की पंगत में भी एक साथ नहीं बैठ सकते तो कल मौत के विकराल जबड़ों का सामना करने में एक-दूसरों का साथ कैसे देंगे?) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अँग्रेजी शासन के खिलाफ आवाज उठाने के लिए पहले भारतीयों में व्याप्त भेदभाव को मिटाने के लिए प्रयत्न करते हैं। अत: वे उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं।

हमारे देश में आज सर्वत्र स्त्री ने अपना अस्तित्व सिद्‌ध करना शुरू किया है। आज कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं रहा जहाँ स्त्री न पहुँच पाई हो। आज हमारे देश को विकसित या प्रगति पथ पर ले जाने के लिए भी स्त्री की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। 'आजाद हिंद फौज' के निर्माण में स्त्री शक्ति के महत्त्व को अपने साथियों तथा पत्रकारों को बताते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - "जगाच्या पाठीवर नसेल, नव्हे नाहीच अशी महिला सेना ! म्हणूनच आम्ही प्रगतीच करायची नाही का? अहिल्याबाई होळकर, चाँदबीबी, रझिया, झाशीवाली ज्या पवित्र मातित जन्मल्या, जिथं यशोदेने श्रीकृष्ण वाढवला आणि जिजाईनं शिवाजी घडवला, त्याच आमच्या महामंगल आणि क्रांतिकारी भूमिमध्ये महिलांची फौज स्थापन होणार नसेल, तर कुठं स्थापन होणार? हा माझा हट्ट समजा वा आग्रह. परंतु कोणत्याही स्थितिमध्ये मी हे स्वप्न पूर्ण केल्याशिवाय उसंत घेणार नाही."[1] (विश्व में कहीं ऐसी स्त्री सेना नहीं है तो न हो, इसलिए क्या हमें भी इस दिशा में आगे नहीं बढ़ना चाहिए? जिस भूमि पर अहिल्याबाई होलकर, चाँदबीबी, रझिया और झाँसीवाली रानी ने जन्म लिया, जहाँ यशोदा ने श्रीकृष्ण को और जिजाबाई ने शिवाजी को युगपुरुष बनाया, हमारी उसी महान, मंगलमयी और क्रांतिकारी भूमि में स्त्रियों की सेना स्थापित नहीं होगी तो फिर और कहाँ होगी? आप इसे मेरा हठ समझे अथवा आग्रह परंतु किसी भी स्थिति में मैं अपने इस स्वप्न को साकार किए बिना चैन से बैठनेवाला नहीं हूँ।)

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि देश को अंग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराने के लिए स्त्री शक्ति की आवश्यकता को सुभाषबाबू नजरअंदाज नहीं करते। कहना सही होगा कि परिवर्तन के केंद्र में स्त्री शक्ति की भूमिका को भी स्वीकार करना पड़ता है। अपने देश को प्रगत राष्ट्र बनाने के लिए, विकसित राष्ट्र के साथ स्पर्धा करने के लिए, हमें किस प्रकार प्रयास करना

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 422

चाहिए इस बारे में सुभाषबाबू जपान के टोकियो विश्वविद्यालय में उपस्थित छात्रों को संबोधित करते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - "ब्रिटिशांच्या आगमनामुळे हिंदुस्तान एकसंघ झाला, हे खरं नाही. स्वातंत्र्योत्तर काळात पुनर्बांधणी, आधुनिकीकरण, शेती सुधारणा अशी क्रांतिकारी पावलं आम्हाला टाकायची असतील तर आम्हाला मजबूत पायावरचं प्रबळ केंद्र सरकार हवं. दारिद्र्य निर्मूलन, शिक्षण, संरक्षण, शेती, उद्योग अशी महत्त्वाची खाती स्वत:कडे ठेवून केंद्र सरकारने प्रगतीच्या दृष्टिने धाडसी पावलं टाकायला हवीत."[1] (यह कहना सच नहीं है कि अंग्रेजों के आगमन के कारण ही हिन्दुस्तान एकता के सूत्र में आबद्ध हुआ। स्वातंत्र्योत्तर काल में देश का पुन:निर्माण करते समय यदि हमें आधुनिकीकरण और कृषि सुधार जैसे क्रांतिकारी कदम उठाने हैं तो उसके लिए सुदृढ़ आधार की एक प्रबल केंद्र सरकार की आवश्यकता होगी। गरीबी का उन्मूलन, शिक्षा, सुरक्षा, कृषि उद्योग जैसे विभागों को अपने हाथों में रखकर केंद्र सरकार को प्रगति की दृष्टि से साहसपूर्ण कदम उठाने होंगे।) उक्त कथन से सुभाषबाबू के राष्ट्रविषयक प्रगल्भ विचारों का परिचय मिलता है। जिसके द्वारा वे देश में परिवर्तन लाने के लिए नई योजनाओं को छात्रों के सामने प्रस्तुत करते हैं। अत: समझने में देर नहीं लगती के उनके देशविषयक विचार परिवर्तनवादी दृष्टिगोचर होते हैं।

अमेरिका द्वारा नागासाकी और हिरोशिमा पर बम वर्षा किए जाने के बाद नेताजी बर्मी आर्मी मंत्री शिडोई के साथ रशिया जाते समय अपने स्वतंत्र हिंदुस्तान के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - " गरीबी आणि बेकारीची समस्या एका कालमर्यादित सोडवावी लागेल. लोकसंख्येचा भस्मासूर बाटलीत बंद करायला हवा. ब्रिटीशांनी स्वत:च्या सोयीसाठी उभारलेल्या प्रशासनाचा पोलादी सांगाडा जाळून, भाजून त्याची योग्य ती डागडुजी केली पाहिजे. जातिधर्माच्या नावावर समाजात द्वेषांची कांडी फिरवणाऱ्या महाभागांना वठणीवर आणायला हवं. कुटीर उद्योगांना वेग, मोठी औद्योगिक प्रकल्प, शेती सुधारणा, नद्यांचं सर्वेक्षण, पाटबंधारे योजना आणि संपूर्ण सुशिक्षित राष्ट्र, एक लिपि, नियोजनबध्द विकास ... बलदंड, बलवान आणि निधर्मी, चैतन्यमय राष्ट्र ऽ !"[2] (जनसंख्या के जिन्न को बोतल मे बन्द करना होगा। अंग्रेजों द्वारा स्वयं अपनी सुविधा और स्वार्थ पूर्ति के उद्देश्य से खड़े किए गए प्रशासन के पौलादी ढाँचे को ढहाकर उसका समुचित संस्कार करना होगा। जाति-धर्म के नाम पर समाज में द्वेष की आग भडकानेवालों को काबू में लाना होगा।

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 604
2. वही, पृष्ठ - 675

कुटिर उद्योगों का का तीव्र विकास, बड़े पैमानेपर औद्योगिक प्रकल्प, कृषिसुधार, नदियों का सर्वेक्षण, बहुउद्देशीय बाँधों की योजना, संपूर्ण सुशिक्षित राष्ट्र, एक लिपी, नियोजित विकास, एक सदृढ, सशक्त पत्थनिरपेक्ष और चैतन्यमय राष्ट्र का निर्माण !) स्पष्ट है कि देश के हर क्षेत्र के विकास के लिए नियोजन क्षमता को सुभाषबाबू आवश्यक मानते हैं। उन्होंने इस बात का जिक्र भी किया कि राष्ट्र के बहुआयामी विकास के लिए कृषि, उद्योग, सींचन तथा लिपि आदि में भी उचित परिवर्तन जरूरी है।

4.5 जनजागृति विषयक विचार :

- जनजागृति विषयक विचारों के केंद्र में 'जन' होता है। इसमें जन को उनके अधिकार, कर्तव्य, न्याय, शोषण के बारे में जानकारी देकर सावधान करना, सचेत करना, जागृत करना, उनके सोये हुए स्वाभिमान को जगाना, दायित्व के प्रति एहसास दिलाना आदि बातों का जिक्र अपेक्षित होता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि जन को जागृत करनेवाला विचार ही जनजागृति विषयक विचार हैं।

4.5.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित जनजागृति विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में जनजागृति विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है। मोहनदास ने इस उपन्यास में गिरमिटियों पर हो रहे अन्याय के प्रति गिरमिटियों को एकत्र कर उनमें जनजागृति की। उन पर हो रहे अन्याय के प्रति उन्हें सचेत किया। उन्हें उन पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार से अवगत कराया और गिरमिटियों में प्रेरणा एवं चेतना जगाने का महान कार्य किया। जीवन जीते समय मनुष्य को कठिन से कठिन स्थिति में उस परिस्थिति का पुरी क्षमता के साथ सामना करना चाहिए। दक्षिण-अफ्रिका से प्रिटोरिया जाते समय मोहनदास के पास फर्स्ट क्लास का टिकट होते हुए भी सिर्फ अश्वेत होने के कारण (उस समय 1893-1994) दक्षिण अफ्रीका में काले-गोरे का भेदभाव था। उन्हें दो गोरे अधिकारी पिटवाकर रेल से बाहर फेंक देते हैं। यह घटना पीटरमेरिजबर्ग के भारतीय व्यवसायिकों को मालूम हो जाती है। वहाँ के व्यापारी मोहनदास को भारत लौट जाने की सलाह देते हैं। तब मोहनदास उन्हें उनकी गैरजिम्मेदाराना प्रवृत्ति के बारे में कहते हैं

- "स्वयं बर्दाश्त करके ही दूसरों को बर्दाश्त करना सिखाया जा सकता है, एक बार जिम्मेदारी से भागकर इन्सान जिंदगी भर ही भागता रहता है।"[1] यहाँ पर मोहनदास गांधी जी के दृढ़ निश्चय की प्रचिती मिलती है। छोटी-मोटी बाधाओं से डरकर या हारकर अपने निश्चय से विचलित न होने की चेतना वे भारतीय व्यवसायिकों में जगाना चाहते हैं।

जीवन जीते समय अगर हम पर कोई जुल्म, अन्याय तथा अत्याचार कर रहा है तो हमें उसके खिलाफ आवाज उठानी चाहिए। मोहनदास कोच गाडी से स्टैण्डर्टन जाते हैं। सेठ ईसा के घर जाने पर मोहनदास उन्हें पार्डिफोक में हुई कोचबॉक्स की घटना के बारे में जानकारी देते हैं। तब सेठ इसा उन्हें 'कोच कंपनी' को तक्रार न करने की सलाह देते हैं। तब मोहनदास उन्हें कहते हैं - "असर हो या न हो, हमें ज्यादती का विरोध करना सीखना चाहिए। अगर नहीं करेंगे तो वे बढ़ती जाएँगी। हमारे पास सिवाय उसे बर्दाश्त करने के कोई रास्ता नहीं बचेगा। बाद में वे बर्दाश्त की सीमा से बाहर होकर हमें नेस्तनाबूत कर देंगी।"[2] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि ज्यादती का, अन्याय तथा अत्याचार का विरोध करना चाहिए। अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाना कितना जरूरी है यह बात मोहनदास के वक्तव्य से यहाँ स्पष्ट हुई है।

अज्ञान और अशिक्षा के कारण मनुष्य को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अंधेरे से प्रकाश की ओर आने के लिए हमें अशिक्षा रूपी अंध:कार को मिटाना होगा। इसलिए ही शिक्षा की जरूरत है। दक्षिण अफ्रीका से मोहनदास कस्तुरबा को जो खत भेजते हैं वह अपने मित्र मेहताब के नाम भेजते थे। क्योंकि कस्तुरबा अशिक्षित थी। वह अपने बेटे हरिलाल को गोद में लेकर मन ही मन खुश होती है तथा हरिलाल को संबोधित करती हुई कहती हैं - "तू जल्दी-जल्दी बड़ा हो जा, अपने बापू की तरह पढ़ लिख ले। जब तू पढ़कर लौटेगा तो मैं तेरी बाट जोहती हुई जिंदा मिलूँगी। तब मैं पढ़े-लिखे पति की पत्नी और पढ़े-लिखे बेटे की बा कहलाऊँगी। दो-दो की पढ़ाई मुझमें समा जाएगी।"[3] कहा जा सकता है कि कस्तुरबा के कथन से हरिलाल की शिक्षा विषयक आस्था प्रकट होती है। वह स्वयं अशिक्षित होने के कारण ही चाहती है कि अपना बेटा पढ़-लिखकर अपने पिता की तरह बन जाए।

कलम की ताकत तोप की ताकत से भी ज्यादा संहारक होती है। कलम की ताकत के कारण ही बड़े-बड़े अधिकारियों को झुकना पड़ता है। मोहनदास भी कलम की

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 112
2. वही, पृष्ठ - 121
3. वही, पृष्ठ - 220

ताकत को जानते हैं। मोहनदास दक्षिण अफ्रीका में रह रहे गिरमिटियों को संगठित कर उन्हें मताधिकार के मामले में अपने विचार स्पष्ट करते हुए कहते हैं - "आप लोगों को याद होगा... एक साल पहले मैं जब डरबन आया था तो दादा अब्दुला मुझे यहाँ कि एक अदालत दिखाने ले गए थे। हाकिम ने मुझे पगड़ी उतारकर अदालत में आने के लिए कहा था। ऐसा न करके मैं अदालत से बाहर चला गया था। उस घटना के बारे में मैंने अखबारों में लिखा था। दोनों तरह की प्रतिक्रियाएँ हुई थी। कुछ पक्ष में कुछ विपक्ष में। एक ही दिन में लोग गाँधी का नाम जान गये थे। कलम की मार तोप की मार से भी संहारक होती है यह कहिए कि कलम तोपों की तोप है। हुक्मरानों को चैन से नहीं बैठने देती।"[1] मोहनदास के उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि कलम की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। कलम एक शस्त्र के समान होती है। अत: हम कह सकते हैं कि मोहनदास के ये विचार गिरमिटियों की जनजागृति विषयक ही हैं इसमें संदेह नहीं।

दक्षिण अफ्रीका में ट्रांसवाल एशियाटिक कानून लागू किया था। इस कानून के तहत हर भारतीय स्त्री-पुरूष को ट्रांसवाल में रहने के लिए परमिट निकालना आवश्यक था। कुछ भारतीय इसका विरोध कर रहे थे लेकिन कुछ भारतीय डरकर रजिस्ट्रेशन करते थे। भारतीय गिरमिटियों को यह मालूम नहीं था कि रजिस्ट्रेशन के कारण उनकी आजादी छीनी जायेगी। उन्हें इज्जत से रहना मुश्किल हो जायेगा। इस कारण रजिस्ट्रेशन कराने के लिए जानेवाले गिरमिटियों को संबोधित करते हुए मोहनदास कहते हैं - "ट्रांसवाल की सरकार तुम्हारी आजादी छीन रही है, तुम पहले से ही गरीब और कंगाल थे, पैसे की कंगाली तो दूर हो सकती है, आजादी की कंगाली बड़ी मुश्किल से पीछा छोड़ती है। हिन्दुस्तान में जैसे दस नम्बरी बदमाशों का रिकार्ड रखा जाता है उसी तरह तुम्हारा हिसाब-किताब सरकारी दफ्तरों में रहेगा। वे तुम्हें कभी भी और किसी भी मामले में जेल में डाल सकते हैं। तुम्हारी बीवी, बच्चों की इज्जत तक सुरक्षित नहीं रहेगी। तुम जरायमपेशा नहीं हो पर जरायमपेशा की तरह जीने के लिए मजबूर होगे, उनकी इस मनमानी का विरोध करके ही इज्जत से जी पाओगे।"[2] स्पष्ट है कि मोहनदास गिरमिटियों में जनजागृति कर उन्हें अन्याय के प्रति सचेत करने का प्रयास करते हैं। अत: स्पष्ट है कि उक्त कथन में मोहनदास गिरमिटियों को रजिस्ट्रेशन से उत्पन्न होनेवाली प्रतिकूल स्थिति

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 220
2. वही, पृष्ठ - 671

के विषय में जागृत करते हैं। अत: उनके ये विचार जनजागृति विषयक विचारों का वहन करते नजर आते हैं।

4.5.2 'महानायक' में चित्रित जनजागृति विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में हमें जनजागृति विषयक विचारों की अभिव्यक्ति पर्याप्त मात्रा में दिखाई देती है। 'महानायक' में सुभाषबाबू अपने विचारों से लोगों में परिवर्तन तथा जनजागृति लाने का प्रयास करते है। आज समाज या राष्ट्र का अस्तित्व युवा पीढ़ी पर ही आधारित है। आज की युवा पीढ़ी जागृत हो गई तो देश को विकसित होने में देर नहीं लगती। देश को आगे बढ़ाने के लिए युवा पीढ़ी की सक्रियता की आवश्यकता है। वे ही देश के सही आधारस्तंभ है। युवा पीढ़ी का समाज या देश का महत्त्व ध्यान में रखकर ही 'पार्क मैदान' में काँग्रेस अधिवेशन में नौजवानों को संबोधित कर सुभाषबाबू कहते हैं - ''जेथे-जेथे जुन्या पीढ़ीतील वृद्ध नेते लुळेपांगळे ठरले आहेत तेथे-तेथे युवक जागृत झाले आहेत. त्यांनी समाजाच्या पुनर्बांधणीची जोखीम स्वत:च्या खांद्यावर उचलली आहे. ब्रिटिशांनी आमची सामाजिक आणि आर्थिक कोंडी चोहोबाजूनं केली आहे.''[1] (जहाँ-जहाँ पुरानी पीढ़ी के बुजुर्ग नेता लुंजपुंज सिद्ध हुए हैं, वहाँ-वहाँ नौजवान जागृत हुए हैं। उन्होंने समाज के पुन:निर्माण का दायित्व अपने कन्धों पर लिया है। अँग्रेजों ने सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से हमारी चौतरफा घेरबन्दी कर ली है।) उक्त कथन से सुभाषबाबू नवयुवकों में अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रति चेतना निर्माण करने का प्रयास करते हैं। सुभाषबाबू को इस बात पर दृढ़ विश्वास है कि युवक शक्ति वह पूँजी है जो हर परिस्थिति में काम आती है।

अपयश आने पर भी हमें निड़रता से आगे बढ़ना चाहिए। सुभाषबाबू महात्मा गांधी जी के म्युनिक करार पर हस्ताक्षर कर उसे स्वीकृत कर देने के कारण मोहनदास और महात्मा गांधी जी में मतभेद निर्माण होते हैं। सुभाषबाबू काँग्रेस अध्यक्ष पद का इस्तीफा देते हैं। सुभाषबाबू रवींद्रनाथ टैगोर से मिलते हैं और काँग्रेस अध्यक्षपद से इस्तीफा देने की बात बताते हैं। रवींद्रनाथ टैगोर जी सुभाषबाबू को संबोधित करते हुए कहते हैं - ''तात्पुरतं अपयश म्हणजे अंतिम पराभव नव्हे! अर्थात, त्याचं आत्मभान तुला आलं आहे. त्यामुळेच तुझी

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 111

पावलं कधी डगमगली नाहीत. उलट संकटच तुझी सगीसोयरी बनली. बंगालच्या सामर्थ्यवान पुत्रा, देशकारणाची धुरा वाहताना तुला सर्वोत्तम यश मिळू दे ऽ !''[1] (एक-दो बार की असफलता का अर्थ अंतिम पराभव नहीं होता, और तुम्हें इसका पूरा भान है। यही कारण है कि तुम्हारे पाँव कभी डगमगाये नहीं, इसके विपरीत संकट तुम्हारा सगा-सहोदर बन गया। हे बंगाल के सामर्थ्यवान पुत्र, मेरी शुभेच्छा है कि देश की राजनीति का दायित्व वहन करते हुए तुम्हें सर्वोत्तम सफलता और यश प्राप्त हो।) उक्त कथन के रवींद्रनाथ जी के विचार प्रोत्साहन देनेवाले हैं। सुभाषबाबू को वह आगे भी इसी प्रकार के संकटों से सामना करने की प्रेरणा देते हैं। अत: कहना ठीक होगा कि रवींद्रनाथ टैगोर के यह विचार जन जागृति के रूप में उपलब्धि सिद्‌ध होते हैं।

सुभाषचंद्र बोस ब्रिटिशों के चंगुल से मुक्त होने के लिए 'अहिंसा' में नहीं क्रांति में विश्वास रखते हैं। वे गुलामी से मुक्त होने के लिए युवकों को महत्त्वपूर्ण मानते हैं। जब सुभाषबाबू बर्लिन में स्थित नौजवान युवकों को स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश का भविष्य आदि के बारे में अपने विचार स्पष्ट करते हुए सुभाषबाबू कहते हैं - ''जेव्हा मी ब्रिटिशांच्या गजाआड गंजत होतो तेव्हाच आझाद हिंद सेना बांधण्याची स्वप्नं मला बेचैन करत होती. आत्ताची ही अखेरची झुंज ठरणार आहे. फक्त स्वातंत्र्यासाठी मला लष्कर हवं का? नाही. उद्या स्वतंत्र झालेला हिंदुस्तान जगातलं एक निधड्या छातीच्या दमदार कार्यकर्त्यांचीही मला गरज आहे. बंधूंनो, आपल्या स्वातंत्र्यावर अभंग श्रद्‌धा आणि निष्ठा ठेवा. भविष्यकाळाची सुवर्णकिरणं तुम्हालाच कुर्निसात करण्यासाठी जन्म घेतील.''[2] (जब मैं अंग्रेजों की कैद में जंग खा रहा था उसी समय से आजाद हिंद सेना के गठन का स्वप्न मुझे बेचैन किये हुए था। अभी चल रहा यह युद्‌ध अंतिम महायुद्‌ध सिद्‌ध होनेवाला है। सेना क्या मुझे केवल स्वतंत्रता के लिए चाहिए? नहीं। मुझे कल स्वतंत्र हो चुके हिंदुस्तान को विश्व का एक श्रेष्ठ और सुसंस्कृत राष्ट्र बनाने के लिए निड़र वृत्ति के सबल और उत्साही कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि सुभाषबाबू नवयुवकों को अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करते है। उनमें जागृति जगाते हैं।

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 212
2. वही, पृष्ठ - 328

सुभाषबाबू 'आजाद हिंद फौज' की निर्माण में स्त्री-शक्ति की अनिवार्यता भी स्वीकारते हैं। उनका मानना है कि आज स्त्री सभी क्षेत्रों में अपना अस्तित्व सिदूध कर रही है। आज ऐसा एक भी क्षेत्र नहीं रहा जहाँ स्त्री न पहुँच पाई हो। इसलिए सुभाषबाबू स्त्री शक्ति को 'आजाद हिंद फौज' के लिए आवश्यक अंग मानते हैं। सिंगापुर के क्वालालांपुर के पडांग मैदान पर जनसमुदाय को 'आजाद हिंद फौज' में स्त्री शक्ति का महत्त्व बताते हुए सुभाषचंद्र बोस वहाँ उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित करते हुए कहते हैं - ''मातांनो ऽ, भगिनींनो ऽऽ, आपल्या कर्तृत्वानं तुम्ही सिदूध करा, उभ्या जन्माला दाखवून द्या, स्त्री म्हणजे वृक्षाच्या आधारावर वाढणारी फक्त वेल नसते, तर आपल्या चपळतेनं अस्मान दणाणून सोडणारी ती विद्युल्लताही असते ऽ ! चाँदबीबी, अहिल्याबाई, सुलताना, रझिया अशा महिलांनी पूर्वि इतिहास घडविला आहे. परंतु चालू शतकातही गुप्त क्रांतिकारी आंदोलनात हातबाँबसारखी स्फोटकं वाहण्यापासून ते पिस्तूल चालवण्यापर्यंत चित्तथरारक मोहिमात त्यांनी भाग घेतला.''[1] (माताओं और बहनों, अपने कर्म से आप सिदूध कर दे। संसार को दिखा दे कि स्त्री वृक्ष का आधार लेकर बढ़नेवाली बेल मात्र नहीं बल्कि अपनी चपलता से आसमान को भी कँपा देनेवाली विदूयुल्लता भी है। चाँदबीबी, अहिल्याबाई, रजिया, सुल्ताना जैसी महिलाओं ने अतीत में इतिहास गढ़ा ही है, इस सदी में भी महिलाओं ने हाथगोले फेंकने से लेकर पिस्तौल चलाने तक मन को थर्रा देनेवाले अभियानों में भाग लिया है।) उक्त कथन से सुभाषबाबू लड़ने के लिए न सिर्फ पुरूषों में जागृति जगाते हैं बल्कि स्त्रियों को भी जागृत करते हैं। इतिहास को अपने पराक्रम से यादगार बनानेवाली स्त्री योदूधाओं का उदाहरण देकर सुभाषबाबू स्त्रियों को भी आजादी की लड़ाई में शामिल होने की दृष्टि से प्रोत्साहित एवं चेतित करते हैं।

अँग्रेजों की गुलामी से मुक्त होने के लिए जपान सरकार भी उनके सैनिकों को 'आजाद हिंद फौज' में शामिल करते हैं। लेकिन युदूध के बीच में ही अनाज की कमी तथा गोलाबारूद की कमी के कारण जपानी सैनिक पीछे हट जाते हैं। जब जपानी सैनिकों के अधिकारी कवाबे यह बात सुभाषबाबू को बताते हैं तब सुभाषबाबू उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - ''रणचंडीच्या अंगाशी झोंबी घ्यायची सोडून पराभवाची भाषा तुमच्या तोंडी का यावी? असं काय घडलं?''[2] (युदूधभूमि में रणचण्डी की तरह जूझने के बदले आपके मुँह से

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 429
2. वही, पृष्ठ - 587

पराभव की कायरतापूर्ण भाषा क्यों निकल रही है? ऐसा क्या घटित हो गया है?) यहाँ सुभाषबाबू के कथनद्वारा जपानी सैनिक को युद्ध को जारी रखने के लिए प्रेरित करनेवाले विचार दिखाई देते हैं।

4.6 अर्थ विषयक विचार :

मानव जीवन में जीविकोपार्जन के लिए पैसों की जरूरत होती है। बिना पैसे के जीवन जीना असह्य हो जाता है। इस कारण पैसा जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जो विचार अर्थ की ओर ले जाते हैं या जिन विचारों में अर्थ की प्रधानता रहती है उन विचारों को अर्थ विषयक विचार कहना पड़ता है।

4.6.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित अर्थ विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास प्रमुखता से दिखाई देता है। भारत से पाँच साल के करार पर अनेक भारतीय गिरमिटियों के रूप में अर्थार्जन के लिए ही गए थे। अत: 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में अर्थ विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है।

मोहनदास बार-एट-लॉ की परीक्षा उत्तीर्ण होते हैं। भारत में वकालत शुरू करते हैं लेकिन वकालत में बेईमानी तथा अर्थार्जन के लिए केस न मिलने पर वे अर्थार्जन के हेतु से ही दादा अब्दुला के केस के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका जाना तय करते हैं। वे दादा अब्दुला के सहयोगी जावेरी भाई से तनख्वाह के बारे में पूछते हैं तब जावेरी भाई मोहनदास से संबोधित करते हुए कहते हैं - "एक साल, साल भर के लिए एक सौ पाँच पौण्ड। आने-जाने का फर्स्ट क्लास का किराया। जहाज तो घर के ही है।"[1] उक्त कथन से हमें जावेरी भाई के विचारों में अर्थविषयक विचार दृष्टिगोचर होते हैं।

मोहनदास अर्थार्जन के लिए दादा अब्दुला के केस की पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रीका जाते हैं। वहाँ गिरमिटियों की दयनीय दशा देखकर मोहनदास दादा अब्दुला से चर्चा करते हैं। चर्चा के दौरान दादा अब्दुला मोहनदास को संबोधित करते हुए कहते हैं - "हम यहाँ सब रोजी-रोटी कमाने के लिए आये हैं चाहे गिरमिटिया हो चाहे व्यवसायी। यही हमारे जीवन

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 54

का उद्देश्य हैं। आप देखते हैं ज्यादातर के परिवार हिन्दुस्तान में हैं वे स्वयं यहाँ आ गये हैं। पैसा यहाँ कमाते हैं और भरण-पोषण वहाँ करते हैं। अगर यहाँ सब ठीक है तो वहाँ भी सब ठीक है। वहाँ ठीक नहीं तो यहाँ भी ठीक नहीं।''[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि चाहे गिरमिटिया हो, चाहे व्यापारी पैसा कमाना ही उनका उद्देश्य रहा है। पैसा ही उनकी जीविका का साधन बन गया है। अगर वे पैसा नहीं कमाते है तो उनके सगे-संबंधियों को जो भारत में रह रहे हैं उन्हें जीना मुश्किल हो जायेगा। अत: पैसा कमाना ही उनका एक मात्र लक्ष्य रहा है।

भारत में आज भी कई ऐसे लोग दिखाई देते हैं कि जिन्हें काम न मिलने के कारण भीख माँगकर अपनी जीविका चलानी पड़ती है। बेकारी की स्थिति भारत में ही है ऐसी बात नहीं। भारत में बेकारी होने के कारण ही हजारो लोग पाँच साल के गिरमिट पर दक्षिण अफ्रीका जाते हैं। दक्षिण अफ्रीका में एक गिरमिटिया की गोरे मालिक के यहाँ खेती की आग बुझाने के चक्कर में आँखे चली जाती हैं। मालिक ने उस गिरमिटिया का न इलाज कराया न उसको फिर काम पर रखा। उस गिरमिटिये पर यह आरोप था कि वह स्वस्थ होने के बावजूद भी भीख माँगता है। तब मैजिस्ट्रेट को गिरमिटिया अपनी दयनीय दशा व्यक्त करते हुए कहता है - ''मैं अपने देश में वापिस नहीं लौट सकता था, यहाँ मुझे कोई काम नहीं देता था, भीख माँगने के अलावा मेरे पास रास्ता ही क्या था? बड़े आदमी कुछ भी करें उन्हें कोई कुछ नहीं कहता, छोटा आदमी करता भी है और मरता भी है।''[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अर्थप्राप्ति के लिए निरूपाय होकर भीख तक माँगने को तैयार होते हैं। अत: काम न मिलने के कारण भीख माँगकर जीना ही उसके जीवन का साधन बन गया है।

अखबार मनुष्य के दु:ख-दर्द को वाणी देने का काम करता है। लोगों के अन्याय-अत्याचार तथा शोषण की बाते समाज के सम्मुख रखने का कार्य अखबार ही करता है। लोगों पर हो रहे अन्याय, अत्याचार तथा शोषण को वाणी देने के लिए ही मोहनदास 'इण्डियन ओपीनियन' अखबार शुरू करते हैं। अर्थाभाव के कारण अखबार चलाना मुश्किल हो जाता है। अर्थाभाव के बारे में स्वयं गिरिराज किशोर लिखते हैं - ''मोहनदास जोहान्सबर्ग में रहते थे परंतु उनका मन नेटाल में प्रेस चलाता था। सामग्री ट्रांसवाल से भेजी जाती थी और

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 88-89
2. वही, पृष्ठ - 372

छपती भी नेटाल में। सामग्री भेजना ही काफी नहीं था पैसे का प्रबंध उससे भी ज्यादा जरूरी था। पच्चहत्तर पौण्ड का खर्च मोहनदास के जिम्मे था। उनके सामने सबसे बड़ा सवाल था इण्डियन ओपीनियन बन्द कर दें या चलाएँ। चलाएँ तो कैसे...?"[1] गिरिराज किशोर के उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि 'इण्डियन ओपीनियन' चलाने में अर्थ की समस्या प्रमुख थी।

4.6.2 'महानायक' में चित्रित अर्थ विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में अर्थ विषयक विचार अल्प मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य मिलते हैं। सुभाषबाबू को शादी के बारे में देखने के लिए दत्ताबाई तथा उनकी बेटी मोहिनी आते हैं। सुभाषबाबू शादी के लिए इन्कार करते हैं। दत्ताबाई उन्हें 'टिलक फण्ड' के लिए एक दो लाख रूपये देना चाहती थी लेकिन सुभाषबाबू शादी से इन्कार करते हैं। इस कारण उन्हें 'टिलक फण्ड' के लिए पैसे नहीं मिल पाते। देशबंधू सुभाषबाबू से कहते हैं - "श्रीमान सुभाषचंद्र, आपल्या एका निर्णयानं काँग्रेस कमिटीला केवढा फटका बसला? अरे चालून आलेला दोन लाखांचा टिळक फंड बुडवलास तू!"[2] (श्रीमान सुभाषचंद्रजी, आपके एक निर्णय से काँग्रेस कमिटी को कितने का फटका लगा, पता है? अरे, सीधे चला आ रहा दो लाख का तिलक फण्ड डुबो दिया आपने।) देशबंधू के उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि काँग्रेस कमिटी को पैसों की जरूरत थी। देशबंधू के इस कथन से अर्थ विषयक विचारों का निर्वाह हुआ है।

देश को गुलामी से मुक्त करने के लिए कई लोगों ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी। बहुत लोगों ने तो अपनी आजीवन की कमाई हुई संपत्ति देशकार्य के लिए दान कर दी। विठ्ठलभाई पटेल अपनी सारी संपत्ति देशकार्य के लिए दान करते हैं। वे अपनी संपत्ती सुभाषबाबू को सौंपकर उन्हें संबोधित करते हुए कहते हैं - "सुभाष ऽ, तू माझ्या इच्छा आकांक्षेचं प्रतीक आहेस. भारताच्या उत्थानासाठी मी माझी संपत्ती तुझ्याकडे सुपूर्द करतो. हिंदुस्तानच्या प्रश्नावर जगभर प्रचार आणि प्रसार करण्यासाठीच तू या संपत्तीचा वापर कर."[3] (सुभाष, तुम मेरी इच्छा-आकांक्षा के प्रतीक हो। भारत के उत्थान के निमित्त मैं अपनी संपत्ति तुम्हें

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 585
2. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 84
3. वही, पृष्ठ - 160

सौंपता हूँ। इस संपत्ति का उपयोग तुम संसार में हिंदुस्तान के पक्ष के प्रचार-प्रसार के लिए करना।) उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि विठ्ठलभाई अपनी उदारता के कारण सुभाषबाबू को अपनी संपत्ति दे देते हैं। वे चाहते हैं कि सुभाषबाबू उस संपत्ति का उपयोग राष्ट्र के विकास एवं उत्थान के लिए करें। कहना गलत न होगा कि विठ्ठलभाई के प्रस्तुत अर्थविषयक विचार राष्ट्र के प्रति अपनी निष्ठा एवं आत्मीयता की अभिव्यक्ति देते हैं।

4.7 उपदेश विषयक विचार :

भटके हुए व्यक्ति को, दिशाभ्रमित समाज को तथा टूटे, बिखरे हुए जीवन को उपदेश के माध्यम से सही मार्ग या दिशा दिखाना ही उपदेशविषयक विचार हैं। दूसरे शब्दों में अगर कहना हो तो उपन्यास में निहित जो विचार पाठक को उपदेश की ओर ले जाते हैं ऐसे विचारों को 'उपदेश विषयक विचार' कहा जाता है। नामदेव, कबीर, जायसी, सूरदास, तुलसीदास ने अपने उपदेश के दूवारा ही समाज को सही रास्ते पर लाने का प्रयास किया है। अत: दिशाभ्रमित समाज को या व्यक्ति को सही मार्ग पर लाने का प्रयास उपदेश दूवारा ही किया जा सकता है। इसके लिए 'उपन्यास' एक सशक्त माध्यम है।

4.7.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित उपदेश विषयक विचार -

गिरिराज किशोर ने 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में हमें उपदेश विषयक विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। उपदेश की जरूरत सिर्फ छोटे बच्चे तथा युवाओं तक सीमित नहीं रहती। कभी-कभी ऐसी परिस्थिति आती है कि बड़े आदमी तथा बुजुर्गों को भी उपदेश देने की आवश्यकता महसूस होती है।

आज समाज में स्वच्छता का महत्त्व बढ़ गया है। इससे स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है और बीमारियाँ भी नहीं फैलती। आज स्वच्छता के महत्त्व के कारण ही सरकार की ओर से 'संत गाडगेबाबा ग्राम स्वच्छता अभियान' जैसे अभियान शुरू किए हैं। बम्बई तथा राजकोट 'प्लेग' की चपेट में आने के कारण ही मोहनदास को 'प्लेग रोकथाम कमिटी' में एक सदस्य के रूप में नियुक्त किया जाता है। मोहनदास लोगों को स्वच्छता का महत्त्व बताते हैं। लोगों को मोहनदास यह भी समझाते हैं कि दलित समाज भी हमारे समाज का अभिन्न अंग है

उन्हें भी स्वच्छता के बारे में आवश्यक जानकारी बताना जरूरी समझते हैं। अतः कमिटी के अन्य सदस्यों को दलितों के घरों को भी देखने का उपदेश देते हुए वे अन्य सदस्यों को कहते हैं - "देखिए, वे लोग भी हमारे समाज के अभिन्न अंग हैं। वे भले ही हमारे बिना रह लें, हम उनके बिना नहीं रह सकते। उनके घर अगर हम लोगों के घरों से ज्यादा गंदे हैं तो हमें उन्हें समझाना होगा और अगर ज्यादा साफ-सुथरे हैं तो हमें उनसे सीखना होगा।"[1] उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि व्यक्ति किसी भी जाति या धर्म का क्यों न हो, अगर उसके पास कोई बात सीखने लायक है तो हमें उनसे सिखना चाहिए। हमें सिखते समय ऊँच-नीचता का भेद नहीं मानना चाहिए।

अखबार समाज का दर्पण होता है। अखबार के माध्यम से ही आज हम देश-विदेश की जानकारी हासिल कर सकते हैं। अखबार ही लोगों के अन्याय-अत्याचार तथा शोषण को वाणी देने का एकमात्र साधन है। सामान्य लोगों के दुःख-दर्द, अन्याय तथा अत्याचार को समाज के सामने लाने का काम अखबार ही करता है। दक्षिण अफ्रीका में सिर्फ अंग्रेजी अखबार था। भारतीय गिरमिटियों की समस्याओं को प्रस्तुत करने के लिए अखबार की जरूरत थी। मोहनदास का उपदेश देते हुए मदनजीत कहता हैं - "अखबार के माध्यम से भारतीय अपनी तस्वीर देख पाएँगे। उनकी पहचान बनेगी सो अलग। जब तक उनकी इच्छाओं, जरूरतों, तकलीफों का प्रचार नहीं होगा तब तक सब एक-दूसरे के बारे में कैसे जानेंगे कि कहाँ पर, किसको क्या तकलीफ या परेशानी है। एक-से दुःख-सुख आदमी को बहुत जल्दी जोड़ते हैं। प्रेस अपना, बस कागज का खर्च होगा वह होगा।"[2] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि गिरमिटियों के अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने का एकमात्र सशक्त माध्यम अखबार था। साथ ही लोगों को अपने अधिकारों के प्रति सजग कराने का काम भी अखबार ही कर सकता था। कहना सही होगा कि मदनजीत के ये विचार उपदेश को प्रस्तुत करते हैं।

मोहनदास के मित्र हेनरी पोलक लंदन में रहनेवाली मिली से प्रेम करता है। लेकिन पोलक मिली को 'फिनिक्स आश्रम' में लाने से इसलिए ड़रता है कि मोहनदास गुस्सा हो जायेंगे। पोलक और मिली के प्रेम के बारे में कस्तुरबा को जब पता चलता है तब कस्तुरबा पोलक को संबोधित करती हुई कहती है - "पोलक मिली को ले आओ। मिली को खिला-

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 396
2. वही, पृष्ठ - 561

पिलाकर ठीक करा दूँगी। गांधी भाई उसको हॉट-कोल्ड बाथ देकर फिट करेगा।"[1] कहना सही होगा कि कस्तुरबा के ये विचार उपदेश को प्रस्तुत करते हैं।

दक्षिण अफ्रीका में मोहनदास कही अन्याय, अत्याचार तथा गिरमिटियों का शोषण के खिलाफ आवाज उठाने के लिए 'इण्डियन ओपीनियन' अखबार शुरू करते हैं। जब कोई पत्रकार अंग्रेजी अखबार में भारतीयों के खिलाफ बेहूदा वक्तव्य लिखता है वह लेख पढ़कर भी उस पर अखबार में कोई प्रतिक्रिया नहीं देते। हेनरी पोलक इस घटना के संदर्भ में मोहनदास को संबोधित करते हुए कहते हैं - "सच्चाई सामने लानेवाला वक्तव्य दीजिए, लेख लिखिए। जब आप हर बात पर लिखते हैं तो इस पर क्यों नहीं लिखते? आपसे बेहतर सच्चाई को कौन जानता है? यह समस्या आपकी और आप के लोगों की है।"[2] पोलक के उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि पोलक विदेशी होकर भी भारतीयों के प्रति सहानुभूति रखता है और उन पर होनेवाले हर अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए प्रेरित करता है।

मोहनदास बड़े से बड़े शत्रू को पराजीत करने के लिए 'सत्याग्रह' को ही प्रमुख अस्त्र मानते हैं। वे मगनलाल गांधी जी को 'सत्याग्रह' की महत्ता बताते हुए कहते हैं - "हमारी लड़ाई का नाम 'सत्याग्रह' है। सत्याग्रह ही हमारा निर्देशक होगा, वही इस काले कानून से लोहा लेगा, जब भी विचार और अस्मिता का संकट आएगा। 'सत्याग्रह' ही हमारा अस्त्र होगा, सत्याग्रह ही हमारा ध्येय होगा, सत्याग्रह वह मन्त्र होगा जिससे हम सारी व्याधियों को जीत सकेंगे।"[3] उक्त उद्धरण से स्पष्ट होता है कि 'सत्याग्रह' के दूवारा ही बड़े से बड़े शत्रू पर भी विजय प्राप्त किया जा सकता है।

दक्षिण अफ्रीका में रह रहे गिरमिटियों का रजिस्ट्रेशन कराना नए कानून के तहत आवश्यक था। जिन लोगों का पंजीकरण नहीं हुआ था उन्हें अन्नधान्य तथा अन्य सुविधाएँ नहीं दी जाती थी। इसी वजह से अनेक भारतीय रजिस्ट्रेशन कराते थे। रजिस्ट्रेशन से होनेवाले नुकसान, तकलीफों को भारतीय 'सत्याग्रही' लोग जानते थे। जो लोग रजिस्ट्रेशन कराने आते थे उन्हें संबोधित करते हुए 'सत्याग्रही' व्यक्ति कहता है - "अगर आप रजिस्ट्रेशन कराएँगे तो हमारी हिम्मत टूट जाएगी। हम सब हार जायेंगे।"[4] उक्त कथन से समझने में देर

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 604
2. वही, पृष्ठ - 604
3. वही, पृष्ठ - 649
4. वही, पृष्ठ - 673

नहीं लगती कि 'सत्याग्रही' व्यक्ति अपने उपदेश के दूवारा ही रजिस्ट्रेशन कराने के लिए जा रहे गिरमिटियों को रोकने का प्रयास करता है। वे उपदेश दूवारा ही रजिस्ट्रेशन से गिरमिटियों पर लागू होनेवाले जाचक नियमों से उन्हें अवगत कराना चाहते थे।

मोहनदास दक्षिण अफ्रीका में एकता स्थापित कर उनकी समस्याओं को सुलझाते हैं। उनके छिने हुए अधिकार को वापिस दिलाने में मदद करते हैं। मोहनदास दक्षिण अफ्रीका में भारत आने से पहले केपटाउन की आयोजित सभा में वहाँ स्थित जोहान्सबर्ग, मेरिट्रजबर्ग, डरबन के लोगों तथा अधिकारियों को संबोधित करते हुए कहते हैं - "मेरे देश के ये लोग सच्चे, बेबस, प्यार के भूखे और गरीब लोग हैं। इनके प्रति इन्सानी नजरिया रखें ... उन्हें समझने की कोशिश करें ... इनके दिलों में झाँककर देखें। आपकी खानों में हिरा हैं ... बस पहचानने की जरूरत है।"[1] मोहनदास का उक्त कथन मानवतावादी उद्देश्य की हिमायत करता हुआ नजर आता है। मानव को मानव के साथ व्यवहार करते समय मनुष्यता को जीवित रखना चाहिए।

4.7.2 'महानायक' में चित्रित उपदेश विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में उपदेश विषयक विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। माँ-बाप अपने बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। बच्चों की पढ़ाई, शिक्षा, आचरण आदि की ओर विशेष ध्यान रहता है। बच्चों के भविष्य को लेकर माँ-बाप को चिंता रहती है। बचपन में सुभाषबाबू 'नव विवेकानन्द मण्डल' स्थापित कर अपने मित्रों के साथ गुरू की खोज के लिए बिना किसी को बताएँ भटकते हैं। जब सुभाषबाबू पंद्रह दिन बाद घर लौटते हैं तब भावविव्हल पिता जानकीनाथ सुभाषबाबू को संबोधित करते हुए कहते हैं - "वेड्या, तुझ्यासारख्या गोड मुलानं मातापित्यांच्या ह्दयात एक तर घरटं बांधू नये. बांधलं, तर असं विसकटू नये. फार वेदना होतात रे ऽ!"[2] (पगले, तुझ जैसे प्यारे बच्चों को तो माता-पिता के ह्दय में अपना नीड़ बनाना नहीं चाहिए। अगर बनाया तो फिर तोड़ना नहीं चाहिए। बहुत पीड़ा होती है रे।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि अपने बेटे को लेकर पिता को उसके प्रति चिंता और प्रेम उपर्युक्त उपदेश के कथन दूवारा दिखाई देता है।

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 902
2. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 38

आय.सी.एस. जैसी नौकरी को प्राप्त करने के लिए हर कोई उत्सुक रहता है। सुभाषबाबू इंग्लैंड में आय.सी.एस. की परीक्षा में कड़ी मेहनत, परिश्रम करते हैं। चौथे नंबर से सुभाषबाबू परीक्षा उत्तीर्ण होते हैं। सुभाषबाबू का एकमात्र उद्‌देश्य था अपने देश की अँग्रेजों की गुलामी से मुक्त करना। इस कारण वे आय.सी.एस. की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद नौकरी से त्यागपत्र देने की बात अपने मित्र दिलिप को बताते हैं। दिलीप सुभाषबाबू को उपदेश देते हुए कहता है - "डोकं फिरलं की काय तुझं? स्वर्गाची शिडी सोडून भिकारी व्हायला निघालास तू?"[1] (तेरा सिर घूम गया है क्या? स्वर्ग की सीढ़ी छोड़कर भिखारी होने की राह पर भला किस लिए जाएगा तू?) इससे स्पष्ट होता है कि दिलिप को सुभाषबाबू का यह आय.सी.एस. से त्यागपत्र का निर्णय पसंत न आने पर वह उसे अपने उपदेश द्‌वारा समझाने का प्रयास करता है।

4.8 इतिहास विषयक विचार :

इतिहास विषयक विचारों से अभिप्राय उन विचारों से हैं जिन विचारों का संबंध ऐतिहासिक घटना, काल तथा इतिहास से होता है। जिन विचारों से ऐतिहासिक घटना, ऐतिहासिक स्थान, ऐतिहासिक परंपरा आदि की जानकारी प्राप्त होती है ऐसे विचारों को इतिहास विषयक कहा जाता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं जो घटित पूर्वइतिहास है उसकी जानकारी जिन विचारों से प्राप्त होती है ऐसे विचारों को इतिहास विषयक विचार कहा जाता है। विवेच्य दोनों उपन्यासों में इतिहास विषयक विचारों का सूत्रपात पर्याप्त मात्रा में मिलता है।

4.8.1 'पहला गिरमिटिया' में चित्रित इतिहास विषयक विचार -

गिरिराज किशोर के 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में इतिहास विषयक विचार अल्प मात्रा में क्यों न हो लेकिन दिखाई देते हैं। 'महाभारत' में अर्जुन वीर योद्‌धा था। अर्जुन का बेटा अभिमन्यु अपनी माँ से चक्रव्यूह नामक युद्‌ध शैली को कैसे अर्जित करता है इस बात की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अपने मित्र हेनरी पोलक की गर्भवती पत्नी को बताते हुए मोहनदास कहते हैं - "हमारे यहाँ एक महाकाव्य है, महाभारत। उसमें एक उपकथा आती है। अर्जुन

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 51

महाभारत का सबसे वीर योद्धा था। उसका बेटा अभिमन्यु था। जब वह गर्भ में ही था तो उसके पिता ने उसकी माँ को एक युद्ध शैली के बारे में बताया। उसका नाम था चक्रव्यूह। लेकिन जब अर्जुन उस व्यूह से निकलने की विधि बताने लगे तो बच्चे की माँ को नींद आ गयी थी। गर्भस्थ शिशु सिर्फ प्रवेश की ही विधि सुन पाया, वह शिशु भी बाद में एक योद्धा बना लेकिन वह बाहर निकलने की विधि न जानने के कारण अपने ही संबंधियों के हाथों मारा गया था।....''[1] उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि मोहनदास के मुख से इतिहास विषयक विचारों की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। इस प्रकार से मोहनदास मिली से अजन्मे शिशु के विषय में बातें करते समय उसे इतिहास में घटित घटनाओं का उदाहरण देते हैं और उस शिशु से उसके भावनिक बंध जोड़ते हैं। अत: इन प्रसंगों में मोहनदास के इतिहास विषयक विचार सामने आते हैं।

4.8.2 'महानायक' में चित्रित इतिहास विषयक विचार -

विश्वास पाटील के 'महानायक' उपन्यास में इतिहास विषयक विचार प्रबलता से दृष्टिगोचर होते हैं। वस्तुत: यह उपन्यास ऐतिहासिक चरित्रप्रधान उपन्यास है। लाल किले में घटित वैध-अवैध घटनाएँ, लाल किले का गौरवशाली इतिहास, अनेक योद्धाओं ने जिसके लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई वह लाल किला। लाल किले का वैभवशाली तथा गौरवशाली इतिहास बताते हुए स्वयं विश्वास पाटील लिखते हैं - ''आपल्या साडेतीन शतकांच्या वाटचालीत किल्ल्याने थोडेथोडके का प्रसंग बघितले? एका बाजूला हिऱ्यामाणकांच्या वर्षावात पार पडलेल्या तक्तपोशी-राज्याभिषेक, अनवट सौंदर्याने नटलेले जनाने, वैभवाने झुलणारे हत्ती, त्यांच्या गळ्यातील सुवर्णघंटा, पाचूंच्या पराती घेऊन नजराणे पेश करता करता वाकलेले परदेशी राजदूत, तर दूसरीकडे छचोर चाकू-बिचव्यांनी रक्तबंबाळ करणारी कारस्थाने! कधी कर्जाने जर्जर पातशहा आणि भुकेने व्याकूळ होऊन धाय मोकलून रडणाऱ्या शहजाद्या! किती हारजीतिचे, मानापमानाचे खेळ पहावेत याने? हिंदुस्थानचे हृदय दिल्ली आणि दिल्लीच्या काळजाची कळ म्हणजे लाल किल्ला! अनेकांच्या महत्त्वाकांक्षी सुवर्णपंखांचा झोपवता वारू, तर अनेक पराक्रमी पुरूषांच्या दुर्भाग्याची भळभळती जखम म्हणजे लाल किल्ला!''[2]

---

1. गिरिराज किशोर - पहला गिरमिटिया, पृष्ठ - 645
2. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 1-2

(अपने साढ़े तीन शतक की सुदीर्घ यात्रा में यह लाल किला जाने कितनी नाटकीय घटनाओं का साक्षी बना। एक ओर हीरे जवाहिरात की वर्षा के बीच संपन्न होते राज्याभिषेक, अद्‌भुत अनिंद्य सौंदर्य से युक्त लावण्यमयी कमनियाँ, वैभव के मद में झूमते हाथी, उनके गलों में झूलती बजती घंटीयाँ, अमूल्य माणिकों से भरे थाल लेकर कोर्निश करते हुए नजराने पेश करते विदेशी राजदूत, तो दूसरी ओर खंजरों, बघनखों से आकांक्षाओं-हसरतों को लहूलुहान कर देनेवाली छिछोरी कमीनी साजिशें, ऋण भार से जर्जर बादशाह और सुधाग्रस्त होकर व्याकुलता से बिलबिलाती बेगमें और शहजादियाँ ! जय पराजय, मानापमान के कितने ही खेल देखे इसने! हिंदुस्तान का हृदय दिल्ली और दिल्ली का अंत:स्थल लाल किला, तो अनेक पराक्रमी परंतु दुर्भाग्यग्रस्त पुरुषों के रिसते जख्मों का भी नाम है - लाल किला।) उक्त कथन से समझने में देर नहीं लगती कि विश्वास पाटील ने लाल किले का इतिहास तथा उसके जय-पराजय के प्रसंगों को यथार्थता के साथ चित्रित किया है।

सुभाषबाबू के काँग्रेस अध्यक्ष बनने पर गुजरात के काँग्रेस अधिवेशन में सरोजनी नायडू उनके कृतित्व का गुनगान अपनी काव्य प्रतिभा से करती हैं। सुभाषबाबू वहाँ अधिवेशन के लिए उपस्थित लोगों तथा नेताओं को अपने देश के वैभवशाली इतिहास के बारे में बताते हुए कहते हैं - ''सुफलाम्, सुजलाम् मातृभूमिशिवाय मी आजवर कोणतंच चित्र पाहिलं नाही. हिमालयाचं अमर्याद पौरूष, पंजाबचा कणखर खांदा, कश्मीरचा उन्नत माथा, गंगायमुनेचं हृदय, बंगाल-गुजरातचे हाथ आणि दक्षिणेची कणखर पावलं, असंच सामर्थ्यवान भारतपुरुषाचं चित्र मी माझ्या हृदयावर रेखाटत आलो आहे. फक्त बंगालच्या परिघात माझं मन कसं अडकणार? माझ्या नसानसात अखंड हिंदुस्थानचं गरम रक्त नाचत आहे. सार्‍या दशदिशात फक्त मला माझी प्रिय मातृभूमी दिसते आहे.''[1] (सुफला, सुजला मातृभूमि के अतिरिक्त आज तक मैंने किसी अन्य भी प्रतिमा पर दृष्टि नहीं डाली। हिमालय का असीम पौरुष, पंजाब का बलिष्ठ कंधा, कश्मीर का उन्नत भाल, गंगा-यमुना का विशाल हृदय, बंगाल-गुजरात के सदृढ़ हाथ और दक्षिण के बलशाली चरण मैंने अपने हृदय पटलपर ऐसे सामर्थ्यवान भारत पुरुष का चित्र रेखांकित कर रखा है। केवल बंगाल का सीमित क्षेत्र ही कैसे बाँधकर रख सकता है मुझे? मेरी रग-रग में अखंड हिंदुस्तान का उष्ण रक्त नर्तन कर रहा है। दसों दिशाओं में मुझे

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 188

केवल मेरी प्रिय मातृभूमि के ही दर्शन हो रहे हैं।) उक्त उद्धरण के जरिए सुभाषबाबू के मुख से अपने देश के भौगोलिक इतिहास का परिचय मिलता है। जिसके आधार पर ही सुभाषबाबू एक सामर्थ्यवान संघटित भारत की कल्पना करते हैं।

अमेरिका जब टोकियो के आसपास को छोटे-छोटे गाँवों पर बम वर्षा करता है, सुभाषबाबू जपान मंत्री तेराउचि से क्या जपान अमेरिका को आत्मसमर्पण करेगा? ऐसा सुभाषबाबू के पूछने पर जपान मंत्री तेराउचि प्रत्युत्तर में कहते हैं - ''चंद्राबोसजी, आपण जपानचा इतिहास नीट वाचल्याचं दिसत नाही. आमच्या सव्वीसशे वर्षांच्या गौरवशाली इतिहासात 'पराभव' हा दळभद्रा शब्द तुमच्या डोळ्यांना आढळून येणार नाही. ज्या मातीमध्ये 'पराभव' हा शब्दसुध्दा जन्म घ्यायला कचरतो तेथे 'शरणागती' या छिनाल शब्दाची काय मातब्बरी?''[1] (चंद्रबोसजी, लगता है आपने जपान का इतिहास ठीक से पढ़ा नहीं है। हमारे छब्बीस सौ वर्षों के गौरवशाली इतिहास में 'पराजय' जैसा शब्द जन्म लेने का भी साहस नहीं कर पाता, उसमें 'आत्मसमर्पण' के समान अपशब्द का अस्तित्व ही कहाँ संभव है?) उक्त उद्धरण से तेराउचि के मुख से जपान के आज तक के गौरवशाली इतिहास की प्रचिती दृष्टिगोचर होती है। अत: तेराउचि के विचार जपान इतिहास विषयक दिखाई देते हैं।

ब्रिटिश अधिकारी बार-बार सुभाषबाबू के मृत्यु का समाचार प्रसारित करते थे। इसी कारण सुभाषबाबू 'आजाद हिंद' के रेडिओं पर जाकर भारतवासियों तथा ब्रिटिश अधिकारियों को प्राचीन काल से लेकर आज तक के भारत की गौरवशाली परंपरा के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं - ''आमच्यामध्ये एकी नाही, असं सिद्ध करण्यापूर्वी विद्वान ब्रिटिशांनी आमच्या इतिहासाचे नीट अध्ययन करावे याचं ख्रिश्चन संवत्सर सुरू होण्यापूर्वी तीनशे वर्ष आधी सम्राट अशोकाच्या काळात मौर्ययुगात माझा खंडप्राय एक देश होता. अरे त्यावेळी एक देश म्हणून तुमचा इंग्लंड जन्म सुध्दा पावला नव्हता. हा ज्वलंत इतिहास डोळ्यांआड करू नका. तुमचं राष्ट्रकुल आणि लंडनच्या राणीचा टेंभा मिरवण्याच्या दुष्ट हेतूनं हिंदुस्तानचे तुकडे करून ते पुन्हा राष्ट्रकुलाच्या परिघात कोंडण्यासाठी सैतानी डाव खेळू नका. माझ्या मंगल भूमित भेदाचं विषारी कडेनिवडुंग पेरू नका.''[2] (यह सिद्ध करने से पूर्व कि हममें एकता नहीं है, इन विद्वानों को हमारे इतिहास का ठीक से अध्ययन करना चाहिए।

---

1. विश्वास पाटील - महानायक, पृष्ठ - 650
2. वही, पृष्ठ - 351

तुम्हारा ईसवी संवत आरंभ होने से पहले तीन सौ वर्ष पहले ही, सम्राट अशोक के काल में मौर्य युग में मेरा यह उपमहाद्विप-सरीखा देश एक सूत्र के रूप में बंधा हुआ था। इस ज्वलंत इतिहास को नजरअंदाज मत करो। अपने राष्ट्रकुल और अपनी रानी की शान दिखाने के द्रष्टतापूर्ण उद्देश्य की पूर्ति के लिए हिंदुस्तान के टुकडे करके पुनः राष्ट्रकुल के परिमण्डल में घेरने का शैतानी दाँव मत खेलो। मेरे पावन भूमि में भेद की विषैली नागफनी के बीज मत डालो।) प्रस्तुत कथन से स्पष्ट होता है कि सुभाषबाबू भारतवासियों को अपनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से अवगत करते हैं। वे इस बात का भी एहसास दिलाते है कि हिंदुस्तान की एकता के लिए ऐतिहासिक आधार है जो सम्राट अशोक से माना जा सकता है। कहना आवश्यक नहीं कि सुभाषबाबू के उक्त विचार इतिहास विषयक विचारों की हिमायत करते हैं।

समन्वित निष्कर्ष :

गिरिराज किशोर का 'पहला गिरमिटिया' तथा विश्वास पाटील का 'महानायक' दोनों उपन्यासों के विचार पक्ष का अध्ययन करने के पश्चात् कहा जा सकता है कि दोनों उपन्यासों में कुछ विचारों को लेकर साम्य या समानता दिखाई देती है तो कुछ विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। दोनों उपन्यासों में प्राप्त साम्य और वैषम्य इस प्रकार हैं -

साम्य -

1. दोनों उपन्यासों में राष्ट्रविषयक विचार प्रधान विचार के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्वारा गिरमिटियों में एकता स्थापित करने का प्रयास, मताधिकार का विरोध, हिंदु-मुस्लिमों को भेदभाव भूलकर राष्ट्रीयता की मुख्य धारा में लाने का प्रयास राष्ट्र की इज्जत की रक्षा करने की शिक्षा, मोहनदास के राष्ट्र के कल्याण की तड़प, देशवासियों पर हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए भारतीय नेताओं को प्रेरित करना आदि राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत विचार प्रस्तुत उपन्यास में पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं। 'महानायक' उपन्यास में राष्ट्रविषयक विचारों की अधिकता दिखाई देती है। इसमें सुभाषबाबू के इंग्लैंड में आय.सी.एस. की परीक्षा चौथे नंबर से उत्तीर्ण होने के बावजूद ब्रिटिशों की गुलामी से युक्त नौकरी को स्वीकार कराने की

बजाय नौकरी से त्यागपत्र, भारत देश को मुक्त करने की उनकी तड़प, देश में साम्यवाद लाने का प्रयास, राष्ट्र उन्नति की आकांक्षा, 'अखंड स्वतंत्र भारत' का उनका सपना आदि राष्ट्रविषयक विचार के द्‌योतक है।

2. 'जन' को जागृत करनेवाले विचार जनजागृति विषयक विचार कहलाते हैं। दोनों में जनजागृति विषयक विचारों का काफी मात्रा में चित्रण मिलता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्‌वारा गिरमिटियों पर हो रहे अन्याय के प्रति गिरमिटियों को एकत्र कर उन में जनजागृति करना, अन्याय के प्रति सचेत करना, उन पर हो रहे अन्याय-अत्याचार से उन्हें अवगत कराना, गिरमिटियों में प्रेरणा एवं चेतना जगाना आदि जनजागृति विषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू ने लोगों में परिवर्तन तथा जनजागृति लाने का प्रयास किया है। इसमें देश की युवा पीढ़ी को चेतना देने का प्रयास, देशवासियों को अन्याय न सह कर अन्याय के विरोध में संघर्ष करने की चेतावनी देना, स्त्री-शक्ति को अपनी शक्ति का एहसास दिलाना आदि जनजागृति विषयक विचार दिखाई देते हैं।

3. भटके हुए व्यक्ति को, दिशाभ्रमित समाज को तथा टूटे, बिखरे हुए जीवन को उपदेश के माध्यम से सही मार्ग या दिशा दिखाना ही उपदेशविषयक विचार हैं। दोनों उपन्यासों में उपदेश विषयक विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्‌वारा स्वच्छता का महत्त्व समझाना, स्वच्छता के प्रति सजग कराना, समाज को दलितों से मतभेद न रखने की सलाह देना, दूरसंचार माध्यमों (अखबार वगैरेह) के संपर्क में रहना, अहिंसात्मक मार्ग से सत्याग्रह करने की सलाह देना, दक्षिण अफ्रीका आयोजित सभा अधिकारियों को मानवतावादी उपदेशों की हिमायत करने का उपदेश देना आदि उपदेशविषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू द्‌वारा छोटे बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने की सलाह देना, युवा पीढ़ी को व्यसनों से दूर रहकर राष्ट्र के लिए समर्पित होने की भावना को उत्तेजित करना, स्त्री को घर से बाहर निकलकर राष्ट्र की मुख्य धारा में आने का संदेश देना आदि उपदेश विषयक विचार प्रधान रूप से दिखाई देते हैं।

4. दोनों उपन्यासों में परिवर्तन विषयक विचारों में साम्य दिखाई देता है। व्यवस्था में परिवर्तन दोनों के केंद्र में रहा है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास द्वारा काला-गोरा भेद में परिवर्तन, दक्षिण अफ्रीका में रेल से गोरों द्वारा पिटकर ढकेल देने के बाद 'सत्याग्रह' के मार्ग से अंग्रेजों में परिवर्तन लाने का प्रयास, गिरमिटियों में मातृभाषा के साथ अँग्रेजी भाषा सिखने के लिए प्रवृत्त करना आदि परिवर्तन विषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में सुभाषबाबू के परिवर्तन विषयक विचारों की अभिव्यक्ति सशक्त मात्रा में दिखाई देती है। सभी का विरोध सहते हुए 'संपूर्ण स्वातंत्र्य की मांग', स्वतंत्र भारत के नियोजन में आधुनिक परिवर्तनवादी विचारों की हिमायत, किसानों, निम्न-जातियों तथा सर्वहारा समाज में परिवर्तन लाने का प्रयास, भूमंडलीकरण की दौड में औद्योगिक विकास को बढ़ावा देने का प्रयास, प्रगत विज्ञान पर जोर आदि परिवर्तन विषयक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

5. जो विचार अर्थ की ओर ले जाते हैं या जिन विचारों में अर्थ की प्रधानता रहती है ऐसे विचार अर्थविषयक विचार कहलाते हैं। दोनों उपन्यासों में अर्थविषयक विचार सामान्य रूप से दिखाई देते हैं। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास के वकालत शुरू करने के बाद असफलता मिलने पर दादा अब्दुला के केस के सिलसिले में अर्थाभाव के कारण दक्षिण अफ्रीका जाने की विवशता, बेकारी के कारण गिरमिटियों का अर्थार्जन के लिए दक्षिण अफ्रीका जाना, कम तनख्वाह में रात-दिन मेहनत करना आदि अर्थविषयक विचार दिखाई देते हैं। 'महानायक' उपन्यास में आजाद हिंद फौज निर्माण हेतु पैसा इकट्ठा करना, देशवासियों द्वारा देश की स्वतंत्रता के लिए आजाद हिंद सेना को संपत्ति दान करना आदि अर्थविषक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

वैषम्य -

6. दोनों उपन्यासों में विद्रोहविषयक विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में मोहनदास के विचार अहिंसात्मक होने के कारण प्रस्तुत उपन्यास में विद्रोह अत्यल्प मात्रा में दिखाई देता है तो 'महानायक' उपन्यास के नायक सुभाषबाबू क्रांतिकारक

विचारों के जाज्वल प्रतीक होने के कारण उनके विचारों में संघर्ष तथा विद्रोह की प्रवृत्ति अधिक मात्रा में दिखाई देती है।

7. दोनों उपन्यासों में श्रम विषयक विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास गिरमिटियों पर आधारित होने के कारण श्रमविषयक विचारों की प्रधानता दिखाई देती है। 'महानायक' उपन्यास में श्रमविषयक विचार अत्यल्प मात्रा में दिखाई देते हैं।

8. दोनों उपन्यासों में इतिहास विषयक विचारों में वैषम्य दिखाई देता है। 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास में इतिहास विषयक विचार अल्प मात्रा में दिखाई देता है तो 'महानायक' उपन्यास में इतिहास विषयक विचार अधिक मात्रा में दिखाई देते हैं।

* * * *